प्रेम पत्र



म्हारे जाट मुखमन्तरी देवी लाल जी,

जै राम जी की !

सच जानों तों मैं भी थारी रियाया हूँ। मेरा जन्म पानीपत की तीसरी लड़ाई के बाद ही हुआ था। जाट भाइयों और लड़ाई का तो पुराना रिसता है। और फिर आप तो ठहरे म्हारे मुखमन्तरी। आपकी लड़ाई करने की आदत तो सबसे घडीं होनी चाहिये। और हमें इस बात का फखर है कि आपने लड़ाइयों में बड़े-बड़े मैदान मारे हैं। यहाँ तक कि आप तो हरियाने की झगड़ालू औरतों तक से बाजी मार ले गये। बिचारी सुषमा को के पता था कि उसका पाला किस पहलवान से पड़ गया है। सुनते हैं कि चारों खाने चित्त होने के बाद अब उसने फिर से अपनी टुकर-टुकर शुरु कर दी है। वैसे भी मज़दूरों से तो उसका पुराना रिसता है ही। उसे आप कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं? म्हारी रपट के मताबिक तो उसकी चाबी दाढ़ी वाले के पास है। और अब तो आपने भी दाढ़ी वाले से खम ठोक के मैदान में कुश्ती करने का बिगुल बजा दिया है।

म्हारा सुझाव मानों तो भाई कुछ दिन अपने प्रेजेन्ट गुरु की शागिर्दी छोड़ के चिरंजी पहलवान के अखाड़े में दाखिला ले लो। अब तो आपको दीख ही गया होगा कि आगे-आगे सिरफ लड़ाई-झगड़ा ही रह गया है। अगर चिरंजी पहलवान के यहाँ दाखिला न मिले तो मेरी शागिर्दी करने में भी आपको फ़ायदा रहेगा क्योंकि मैंने पानीपत की लड़ाई से लेके आज तक भतेरी लड़ाई के दांव-पेच सीख रखे हैं। पर मेरी फ़ीस का ख्याल करके ही मेरे पास आना। मैं अपने चेलों से रोज तेल-मालिश भी करवाता हूँ कहीं आपकी मुखमंतरी में फरक न पड़े।

आपका

चित्तली

100 × 50 = 5000.00
50 × 17 = 850.00
70 × 6 = 170.00

मुख्य पृष्ठ पर

10 × 13 = 130.00
180.00

तस्वीर बनाता हूँ मैं खूने-जिगर से
इतनी धूप में चांद को लाऊं किधर से।
बहुत सोच विचार कर निकाला एक हल
कितना सुन्दर लग रहा है ये सीता फल॥

5 × 20 =



दीवाना

22 ... से ४ जुलाई १९७८ अंक : १४ 78

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु
द्विवार्षिकः ९१

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



त्रिलोक सिंह, हलद्वानी (नैनीताल)

प्र० : पार्टी के कुछ पत्ते पेड़ से गिरते-गिरते उड़ गए, इसका अर्थ बताइए ?

उ० : कर्नाटक और आन्ध्र में सत्ता-पत्ता साफ।
चरणसिंह से पूछिए इसका मतलब आप॥

****

सुरेश खुराना, जींद (हरियाणा)

प्र० : उन्नतिशील व्यक्ति यदि अवनति की ओर जाने लगे तो उसे क्या सजा मिलनी चाहिए ?

उ० : कोई क्यों इसके लिए, नाहक टाँग अड़ाय।
अवनति के द्वारा उसे, स्वयं सजा मिल जाय॥

****

अशोक कुमार बंसल, आगरा

प्र० : आदमी अपने होश-हवास कब खो बैठता है ?

उ० : ठोकर मारे प्रेमिका, होश-जोश सब खोय।
या चुनाव के खेल में, जब्त जमानत होय॥

****

राजेन्द्र सिंह कोहली, कानपुर

प्र० : कहते हैं जवानी चार दिन की होती है, तो शादी कौन से दिन करनी चाहिए, काका ?

उ० : ब्याह सटरडे को करो, सनडे मौज मनायं।
मौज-मजे के वास्ते, दो दिन तो मिल जायं॥

****

विनोद साहनी, बरेली

प्र० : पत्नी का बेलन ही मशहूर क्यों हो गया है, जबकि हथियार बहुत हैं ?

उ० : डाक्टर पर जाना पड़े, लगे अन्य हथियार।
बेलन मीठी मार है, कर लें खुद उपचार॥

****

विनोद राजपाल, फैजाबाद

प्र० : काकाजी कोई ऐसी पुस्तक छपी है क्या, जिसमें आपके कारतूस हों ?

उ० : मनहूसी का अन्त हो, मगन कामिनी कंत।
बुक स्टालों पर मिले, पढ़ो 'हंसत-वसंत'॥

****

... कौन-सा होता है ?

... ी प्रिय से बात।
... हाग की रात॥
... से चिपकाय।
... मिल जाय॥

****

दाबड़ा क्लाथ हाउस, सिरसा हिसार

प्र० : सुना है काकी लड्डू अच्छे बनाती हैं, कुछ इधर भी भेज दीजिए ना !

उ० : क्लाथ हाउस है आपका, भेजो साड़ी चार।
बदले में मिल जाएंगे, लड्डू भर कर थार॥

****

अरुण पासवान, धनबाद, (बिहार)

प्र० : दूध खरीदते समय उसमें उंगली डुबाकर देखते हैं, कपड़ा खरीदते समय क्या करते हैं ?

उ० : कितना पानी मिल रहा, रहे दूध को कूत।
कपड़ा उंगली से रगड़, देखें उसके सूत॥

****

राजकुमार पूनिया, पानीपत

प्र० : इन्सान को दौलत का नशा देर में होता है, शराब का नशा जल्दी क्यों हो जाता है ?



उ० : चढ़े देर में नशा जो, देरी तक रह पाय।
जितनी जल्दी चढ़े जो, उतनी जल्दी जाय॥

****

सुधा कुमारी गोयल, तिनसुखिया (असम)

प्र० : पत्नी, पति की सेवा करके पतिव्रता कहाती है तो पति ?

उ० : जिस घर में नारी सुखी, लक्ष्मी दौड़ी आय।
पत्नी की पूजा करे, पत्नीव्रता कहाय॥

****

तेहसिनुद्दीन मोहसिनुद्दीन, जाफराबाद

प्र० : अगर यार मतलबी मिले तो ?

उ० : मतलब में भी लव घुसा, क्यों डरते हैं व्यर्थ।
बेमतलब लव का नहीं, होता कुछ भी अर्थ॥

****

संध्यारानी अग्रवाल, इलाहाबाद

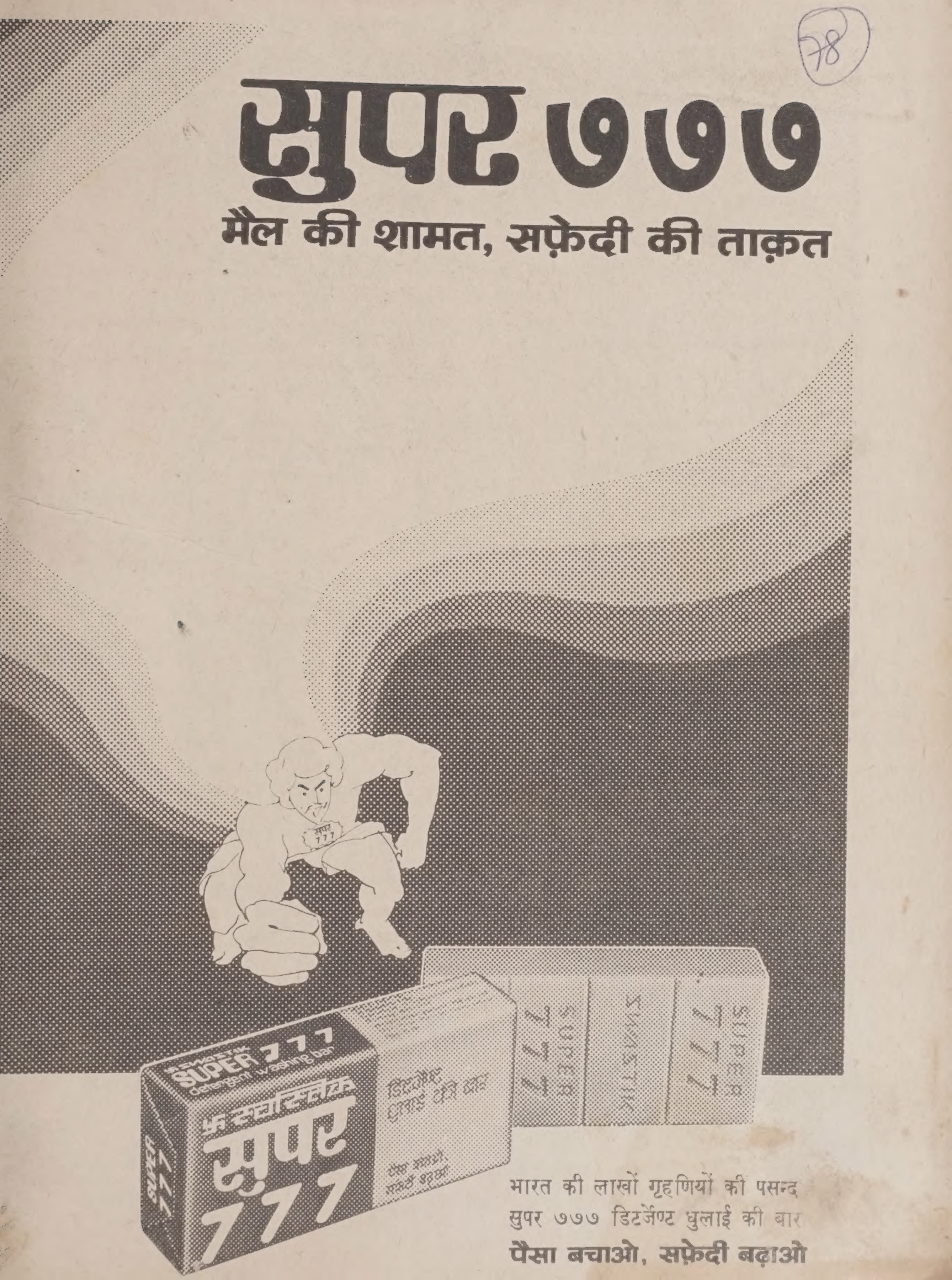
प्र० : पति का चुनाव करते समय उसमें क्या विशेषताएं देखनी चाहियें ?

उ० : एयर कण्डीशण्ड हो, दिल दिमाग से नर्म।
गर्मी में ठण्डा रहे, सर्दी में कुछ गर्म॥

****

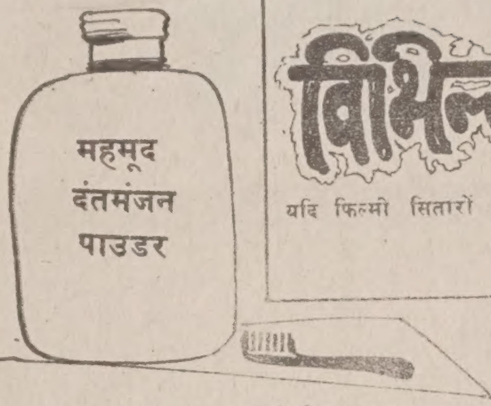
अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२


सुपर ७७७
मैल की शामत, सफ़ेदी की ताक़त
SUPER 777
सुपर
777
भारत की लाखों गृहणियों की पसन्द
सुपर ७७७ डिटर्जेण्ट धुलाई की बार
पैसा बचाओ, सफ़ेदी बढ़ाओ

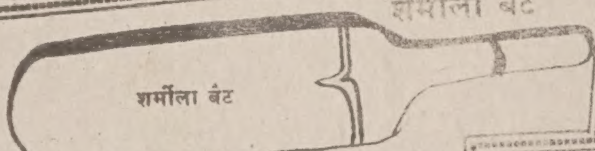
सितारों के नाम विभिन्न वस्तुओं के नाम ब्रांड

यदि फिल्मी सितारों के नाम लेकर विभिन्न वस्तुओं के ब्रांड नाम रखे जायें तो कैसा रहेगा ? यह फीचर पढ़ क[र]
आप खुद देख लीजिए, काफी फिट बैठते हैं।



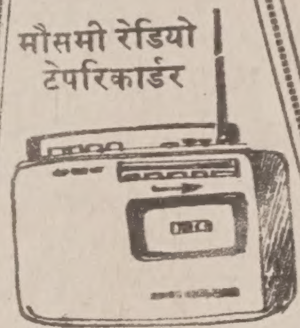
महमूद का काम बत्तीसी निकलवाना यानि हंसाना है। इसलिये दंतमंजन का यही ब्रैंड नाम अच्छा रहेगा।

शर्मीला बैट



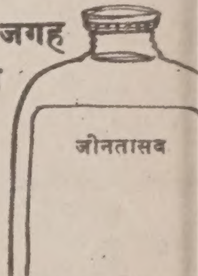
शर्मिला के नाम पर क्रिकेट के सामान का नाम सहज ही रखा जा सकता है।

मौसमी रेडियो टेपरिकार्डर



मौसमी की जुबान भी टेपरिकार्डर रेडियो की तरह चलती ही रहती है।

द्राक्षासव की जगह जीनतासव



द्राक्षासव भोजन पचा कर भूख जगा[ता]
है. उसी प्रकार जीनत भी आदमी [की]
सैक्स की भूख जगाती है।

नीतू कमंडल



कमण्डल ऋषियों-बाबाओं के का[म]
आता है। फिल्मी ऋषि कौन है [यह]
तो आप जानते ही हैं।

अमोल साईकिल



अमोल मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और साईकिल मध्यम वर्ग का वाहन है।

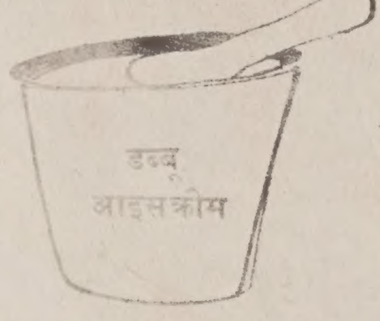


इनक्रीमिन का नाम बदल अमिताभ क्रिन रखा जाये।

परवीन ऐशट्रे



वह [illegible] में सिगरेट पीती है



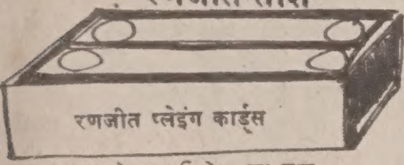
आइसक्रीम मोटा बनाता है।

शत्रुघ्न लाउड स्पीक[र] एम्पली फायर्स



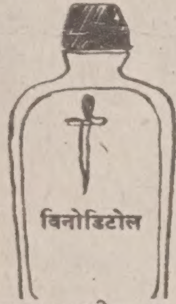
बढ़ा-चढ़ा कर बोलना शत्रु का
काम है ही।

रणजीत-ताश



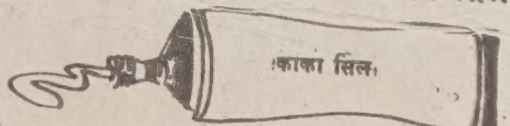
जुआ खेलना विलेन का एक प्रमुख काम है।

डिटोल की जगह

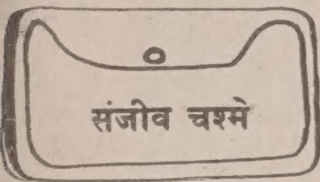


विनोद खन्ना मारपीट का काम ही तो करता है। मारपीट के बाद जख्मों पर डालने के लिये।

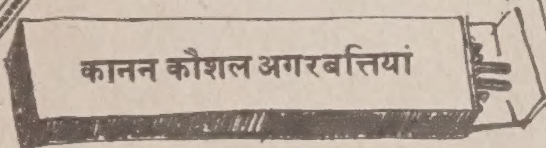
गालों के फोड़े फुंसियों के लिये काका सिल



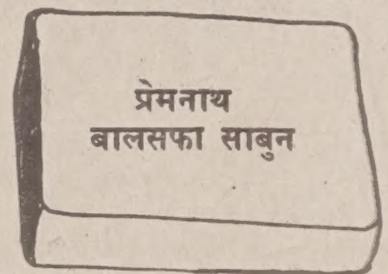
राजेश खन्ना के मुँह पर फुन्सियां-सी निकली ही रहती हैं।



संजीव हर बूढ़े रोल में चश्मे जरूर पहनता है।

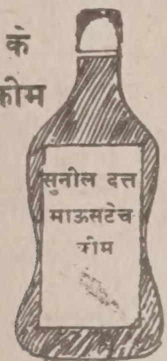


कानन कौशल धार्मिक फिल्मों में आती है। अगरबत्तियां भी पूजा के काम ही आती है।



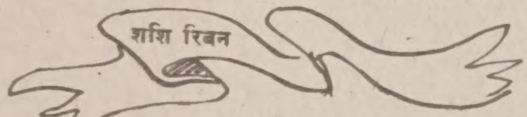
यह सुझाव प्रेमनाथ के सफाचट सिर को ध्यान में रख किया गया है।

मूछों के लिए क्रीम

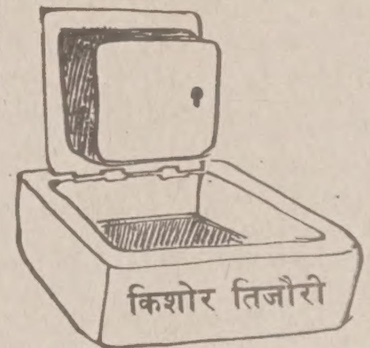


मूछें खड़ी रखने वाली क्रीम का नाम सुनील क्रीम रखा जाये। डाकू भूमिकाओं में सुनील मूछें खड़ी किये ही नजर आता है।

शशि रिबन

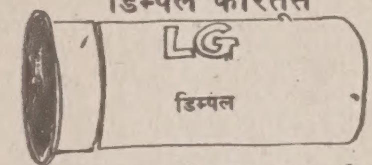


चोटी पर बांधने के शशि रिबन। शशि खुद भी इस समय चोटी पर है।



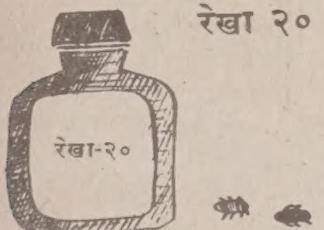
किशोर अपनी सारी कमाई तिजौरी में बन्द रखता है। महा मक्खीचूस है। अतः किशोर ब्रांड तिजौरी का सुझाव है।

डिम्पल कारतूस

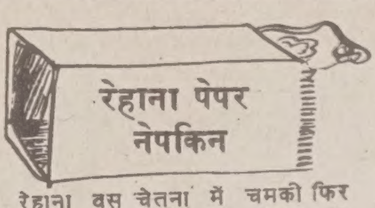


कारतूस एक ही बार चलता है। डिम्पल भी एक ही बार बॉबी में चली फिर कोई फिल्म नहीं।

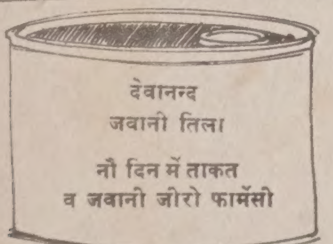
खटमल मारने की दवा रेखा २०



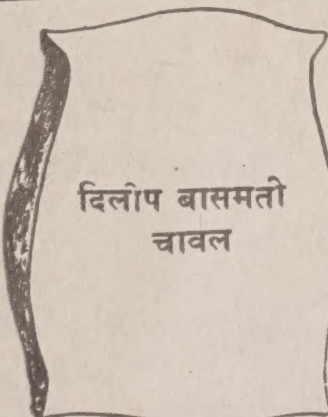
(आत्महत्या के काम भी आ सकता है)



रेहाना बस चेतना में चमकी फिर काम नहीं आई। पेपर नैपकिन भी एक ही बार काम आता है।

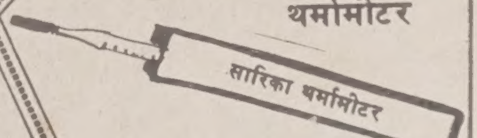


बुढ़ापे में जवानी लाने वाली दवा का और नाम क्या रखा जा सकता है?



बासमती चावल जितना पुराना हो उतना ही अच्छा होता है।

थर्मामीटर



सारिका का पारा थर्मामीटर की तरह ही चढ़ता-उतरता रहता है।

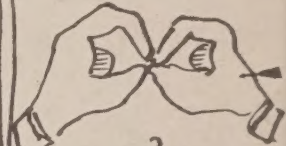
गूंगे, बहरों की सांकेतिक भाषा का दीवाना रूप

गूंगे, बहरे हाथ के इशारों से बहुत कुछ कह डालते हैं–जैसे इस फीचर में हम २८ संकेत दे रहे हैं नम्बर १ से २६ तक अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर ए से जेड तक का सांकेतिक रूप है । २७ का अर्थ अच्छा और २८ का बुरा है । अब हम इन्हीं संकेतों के दीवाने अर्थ बताते हैं । अर्थात् हाथों से कोई ऐसे संकेत दे तो क्या समझें ।



1

तुम अंगूठा टेक हो ?



2

तुम्हारी आंखें हैं या बटन ।



3

इतनी सी डालना मेरे गिलास में ।



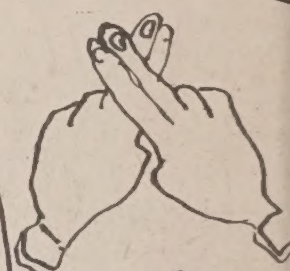
4

तुम्हारा मुँह खुला है, मक्खी घुस जायेगी ।



5

मेरी बीवी से यूं लगती है ।



6

मेरे सिर मत चढ़ो ।



7

मेरी दोनों मुट्ठियों में लड्डू हैं ।



8

मुझे मक्खन मत लगाओ ।



9

मुझे बीच वाली लड़की पसन्द है ।



10

बीच वाली ने मुझे चांटा मारा ।


11 तुम कुर्सी पर क्या अकड़ कर बैठे हो।
मेरी हथेली गर्म करो। 12
तुम नाई के पुत्र लगते हो। 13
ताली दोनों हाथों से बजती है बेवकूफ। 14
15 तुम थर्ड क्लास इन्सान हो।
16 तुम विटामिन ए या डी मिला वनस्पति घी खाते हो?
17 थोड़ी सी कसर है तुम्हारे पागलखाने पहुंचने में।
18 मेरे छाते को अपने गन्दे हाथ मत लगाओ।
19 तुम्हारे पेट में कीड़े हैं।
20 तुम्हारी टी शर्ट का कालर फटा हुआ है।
बकरे की मां 21 कब तक खैर मनायेगी।
22 तुम्हारे हाथ में दो दिन भी तनख्वाह नहीं टिकती
23 तुमने कभी पिरामिड पर बैठ सिगरेट पिया है?
24 तुम मेरी नाक कटवा दोगे।
25 तुम अन्दर से ही नहीं बाहर से भी काले हो।
मेरे हाथ में खुजली हो रही है पैसा आयेगा। 26
जा जा जहन्नुम में 27
तुम्हें अंगुली पर नचाऊंगी। 28

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

दया शंकर—जबलपुर :

होनी को अनहोनी कहते,
अनहोनी को होनी ।
देखो लोगों कैसा लफड़ा,
करते चचा बातूनी ।

उ० : रंगी को नारंगी कहते,
और बने दूध को खोया ।
दुनिया की यह हेरा फेरी,
देख कबीरा रोया ।

अनिल कुमार गुप्ता—तपकरा : प्यारे चचा जान, सुना है आप श्री राजनारायण का पद छीनने के कोशिश में हैं ?

उ० : जैसी बातें वह कर रहे हैं, उससे तो लगता है कि वह खुद चाचा बातूनी बनने के चक्कर में हैं ।

केशव देव इन्दौरिया—श्री गंगानगर : जो अपनी फोटो दीवाना फ्रैंडज क्लब में छपवाना चाहे उसमें क्या विशेषता होनी चाहिये ?

उ० : केवल इतनी सहनशीलता होनी चाहिये कि फोटो अधिक होने के कारण हम जल्दी न छाप सकें तो वह रोने न लगें ।

गोविन्द दास रजिस्नेही—रायपुर : क्या हमारा देश कभी तरक्की कर सकता है ?

उ० : क्यों नहीं महंगाई, बेकारी, गरीबी, चोरबाजारी, जमाखोरी, कुनबावखरी, रिश्वतखोरी, आबादी, हर चीज तरक्की पर है ।

हरगुन जसवानी—मन्डला : चाचा जी, शादी के बाद दिल को राहत मिलती है या बैचेनी ।

उ० : क्या था दिल शादी से पहले,
मत पूछो अब क्या किलकिल है ।
तब दिल को मसोसे रहते थे,
अब हाथ लगाना मुश्किल है ।

एस० एम० राव—जमशेदपुर : चाचाजी, यह बताइये कि चाची आप से कितना प्रेम करती हैं ?

उ० : जितना अधिक से अधिक प्रेम एक छुरी खरबूजे से कर सकती है ।

देवी दयाल सेठी—फरीदकोट : चाचाजी, आप किसी सरकस से भागे हुये तो नहीं हैं ?

उ० : जी हां, जानवरों से डरकर भागे तो थे । पर ऐसे अभागे निकले कि आप के बीच पकड़े गये ।



चन्द्र प्रकाश—मुराव रोड, बदायूं : हेमा मालनीकी शादी किस से होगी ?

उ० : अभी तक तो कोई फैसला नहीं हुआ है । आप भी चेहरे पर क्रीम पाउडर लगा कर और वरमाला लेकर लाईन में लग जाईये । वैसे हम आपको बता दें, कि शादी के उम्मीदवारों की लाईन इतनी लम्बी है कि बारी-बारी सबसे इंटरव्यू करने में हेमा मालिनी का एक-एक मिनट भी लगा तो आपका नम्बर आने तक इस पौडर लगे चेहरे पर झुरियों का जाल होगा और पांव कि ओर देखेंगे तो पता चलेगा कि कब्र में लटके हैं ।

रमेश चन्द्र कलाबाज—जनौली : डीयर अंकल आप की महफिल में पहली बार कदम रख रहा हूं । जूते बाहर उतार आऊं या पहने रहूं ?

उ० : हमारी महफिल में आते समय आप को जूतों की चिंता क्यों रही ? यहां कभी किसी आने वाले के लिये जूतों की कमी नहीं रही ।

शिवकुमार गुप्ता—जम्मू : मैं दीवाना के पुराने अंक मंगवाना चाहता हूं, इसके लिए क्या करूं ?

उ० : हमारे सर्कूलेशन विभाग को उन अंकों के नम्बर भेजिये और उनका मूल्य और फिर राम नाम का जप करते रहिये कि वे अंक हमारे यहां समाप्त न हुए हों ।

प्रताप सोमवंशी—मथुरा : देश का हर नागरिक आप की तरह सोचने लगे तो क्या देश से गरीबी दूर हो जाएगी ?

उ० : जी नहीं, जो आज गरीब हैं वे तो गरीब नहीं रहेंगे । पर वे मोटे नेता गरीब हो जाएंगे जो आज हल्के मांडे खा रहे हैं । इस प्रकार गरीबी फिर भी दूर नहीं होगी ।

कमल कान्त जैन—दिल्ली : चाचा जान, दोस्त कितने प्रकार के होते हैं ?

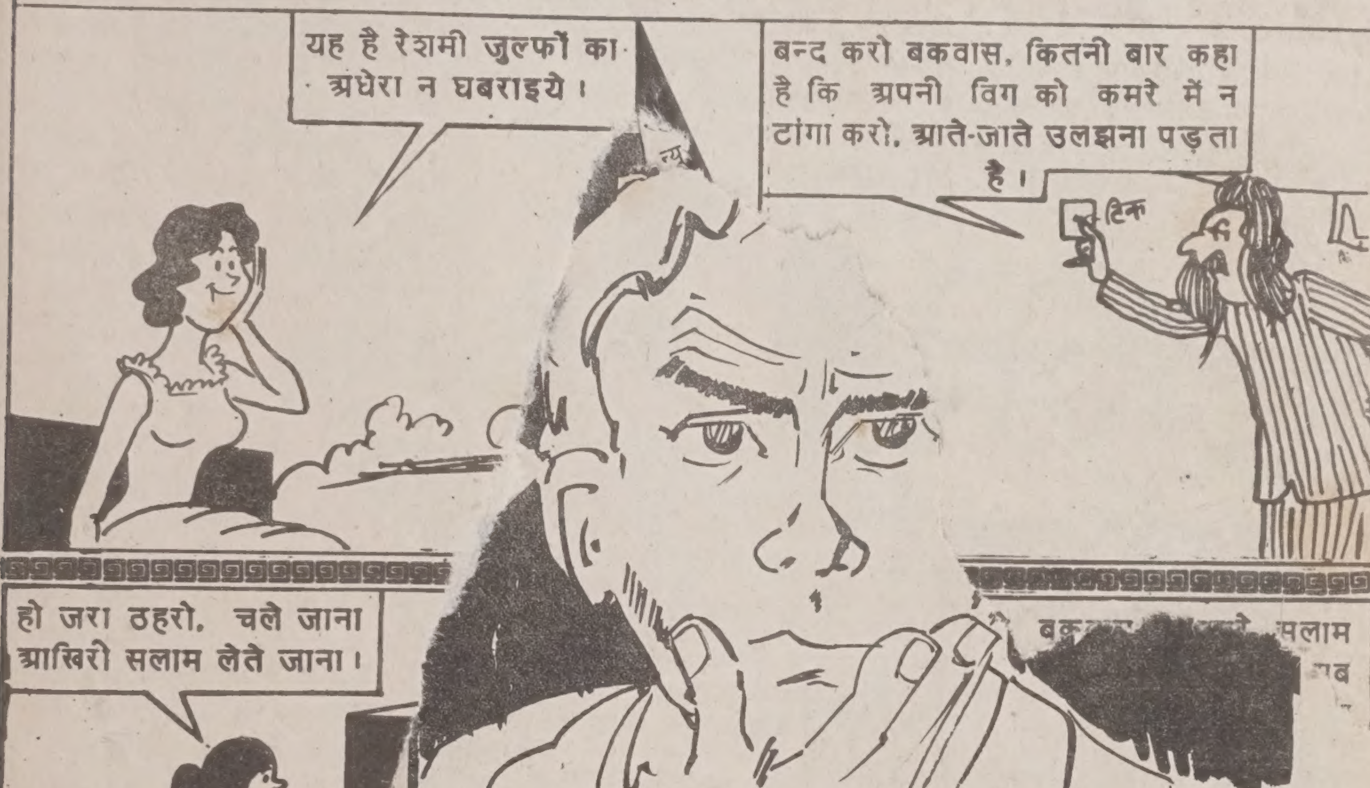
उ० : दो प्रकार के । एक हमारे जैसे, कि कोई तरक्की की सीढ़ी पर चढ़ने लगे तो नीचे से सीढ़ी पकड़ लें । दूसरे आम दुनियादारी जैसे कि किसी के कंधे पर सीढ़ी लगा कर खुद ऊपर चढ़ जायें और सीढ़ी नीचे गिरा कर सहारा देने वाले को कंधे पर ईंट दे मारें ।

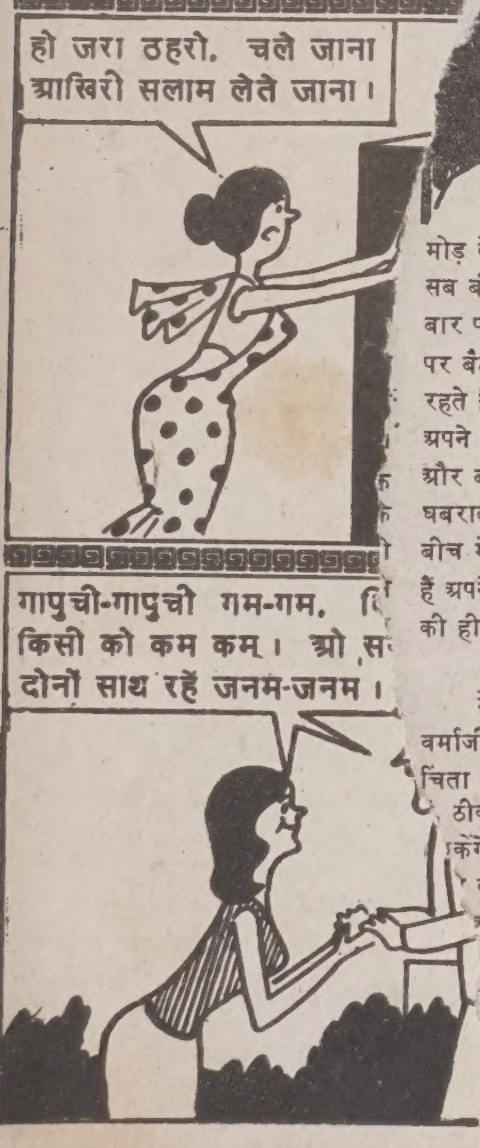
तहसिनुद्दीन, मोहसिनुद्दीन—जाफराबाद : सुना है दूसरों को हंसाने वाले रात की तनहाइयों में रोते हैं । क्या आपका दीवाना स्टाफ भी रात को फूट-फूट कर रोता है ?

उ० : पूरे स्टाफ का तो पता नहीं । पर हमारी आंखें कमैटी की बिना टूटी वाली पाईप लाईन की तरह चालू ही रहती हैं । कल यह पाईप लाईन घड़ी भर को रुकी थी । हमारी श्रीमती जी की माताजी जो बहुत दिनों से हमारे यहां रह रही थीं और हमारी श्रीमती जी उनके साथ जानवरों का सा व्यवहार किया करती थीं । जब वह अपना ट्रंक और बिस्तर लेकर घर से जाने लगीं तो हमने अपनी श्रीमती जी से हमदर्दी जताते हुए कहा, "हमें बड़ा अफसोस है कि तुम्हारी माताजी यहाँ चैन से न रह पाई और अब वह जा रही हैं ।' इस पर हमारी श्रीमतीजी ने कहा, "मेरी माताजी ! यह मेरी माताजी कहां हैं ? मैं तो इतने दिनों से समझ रही थी कि यह तुम्हारी माता जी हैं ।" और इस बात पर हमारी आँखों की [illegible] फिर चालू हो गई ।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास





मोड़ देता हूं तो सफाई देते हैं—'आजकल सब बीमार हैं। इतना समय कहां कि अखबार पढ़ सकूं ?' जबकि गोयलजी की दूकान पर बैठे एक ही अखबार को घंटों तक चाटते रहते हैं। यदि मित्रों के बीच बैठते हैं तो अपने बबलू को जरूर साथ लिये होते हैं। और बार-बार पूछते हैं—'तबियत तो नहीं घबराती ? प्यास तो नहीं लगती ?' बीच-बीच में नब्ज देख लेते हैं। जिससे भी मिलते हैं अपने पेट की खराबी, बच्चों की बीमारी की ही चर्चा करते हैं।

मेरे सबसे अधिक शुभचिंतक हैं वर्माजी। उन्हें हर समय मेरे स्वास्थ्य की चिंता रहती है। जब भी कुछ लिखता होता ठीक उसी वक्त तूफान की तरह आ धमकेंगे और कहेंगे—'तुम मेरी वजह से लेखन में विघ्न मत डालो। आजकल अच्छा लिख लेते हो। पहले यह बताओ तो अच्छा है न ? मैं तो केवल इतना जानने आया था। मुझे कितनी प्रसन्नता यह देख कर कि मेरा एक मित्र के रूप में जाना जाता है अच्छा अब छुड़वाकर हर समय राजनीति में उतर आने को प्रेरित करते हैं या अपना स्वयं का मासिक पत्र निकालने की सलाह देते रहते हैं। उन्हों में से कोई सलाह देते हैं—'क्या रखा है लेखन-वेखन में ? आजकल गुड़ का धंधा बहुत अच्छा चल रहा है। यदि एक बार कर लिया तो मालामाल हो जाओगे।'

आप कहेंगे, मेरे भी कितने गलत विचार हैं। बिना मित्रों के जीवन नीरस होता है। और एक मैं हूं कि मित्रों से दूर भागता हूं। मैं अपने मित्रों को बुरा नहीं कहता। क्योंकि वे मेरी हरएक कठिनाई का ख्याल रखते हैं। मुझे प्रसन्न रखने के लिए मेरे निकट आते हैं। उनका उद्देश्य होता है मुझे लाभ पहुंचाना, लेकिन हो जाता है हरबार नुकसान। दिन-रात होते नुकसान से बचने के लिए नित्य प्रातः यही प्रार्थना करता हूं—'हे भगवान ! मुझे मेरे मित्रों से बचाओ !' पर मैं उनसे जितना दूर भागता हूं, वे मेरे उतने ही निकट आते हैं। आंखों के आगे भिखारी का चेहरा घूम जाता है। उससे मुझे ईर्ष्या होने लगती है। कितना भाग्यशाली है वह व्यक्ति जिसका कोई मित्र नहीं है। ●

जब भी सुभाष सर्किल से गुजरता हूं, हॉस्पीटल धर्मशाला के ग्रहाते से सटकर बैठे भिखारी के प्रति ईर्ष्या से भर उठता हूँ। उसके सामने स्वयं को हीन ग्रनुभव करता । भिखारी ग्रब भी उसी स्थान पर बैठा है, पहले भी बैठता था, महीनों पहले भी, वर्षों पहले भी । लेकिन उसके मुख से हरबार एक शब्द निकलते हैं, नपे-तुले । निकट से गुजरते किसी व्यक्ति को देखकर वह कहने लगता

की ग्रावाज़ सुन कर माथा ठनक उठता है। श्रीमतीजी के ग्रभ्यस्त कान दस्तक को ग्रासानीसे पहचान लेते हैं ग्रौर वे दरवाजा खोलती हैं कि निश्चलजी एक ग्रदद बीमार कुर्सी पर ग्राराम से पसर जाते हैं। बॉथरूम से निकलकर ग्राता हूं तो ग्रभिवादन का घिसापिटा क्रम ठीक उसी तरह ग्रारम्भ होता है जैसे फिल्म से पहले ... ज़-रील । निश्चलजी के ग्रागमन का कार ... ने की ... डरकर भ ...

... नकले कि ग्राप ...

व्यंग्य—

मुझे मेरे ... से ब...



है । कहता ...

है—'ग्राब ...

सुनाना शुरू करते हैं । उनकी कविताएं इतनी नई होती हैं कि सिर, धड़, दुम ग्रादि कुछ भी पकड़ नहीं ग्राता फिर भी निश्चलजी तन्मय होकर एक के बाद एक ग्रविराम कविता सुनाते रहते हैं। मैं मुक्ति पाने के उद्देश्य से कहता हूं—'निश्चलजी, ग्रापकी कविताएं इतनी स्तरीय हैं कि किसी भी पत्रि-का में छप सकती हैं । मेरे एक संपादक मित्र है'''वाक्य पूरा भी नहीं कर पाता कि निश्चलजी तुनक उठते हैं—'मैं ऐसी बेवकूफी नहीं कर सकता । किसे पता संपादक कविता की प्रति कर ग्रपने पास रख ले ग्रौर मूल को ग्रभिवादन सहित लौटा दे । तुम समझते नहीं ग्राजकल दौलत की चोरी पकड़ना सरल हो गया । लेकिन संपादक की चोरी पकड़ने का यंत्र ग्रभी तक वैज्ञानिकों ने नहीं बनाया । कितने पिछड़े हैं ग्राज के वैज्ञानिक भी ? इसलिए मैं ग्रापनी रचना किसी संपादक को नहीं दे सकता ।, मुझ पर ग्रहसान का एक गैर बोझ लाद कर कहते हैं—'वह तो तुम भरोसे के ग्रादमी हो इसलिए सुना भी हूं ।' कठिनाई से शुद्ध ग्रप्रकाशित महा- निश्चलजी से मुक्ति पाकर मिमियाती से श्रीमतीजी की ग्रोर इस ग्राशय से कि वह निश्चलजी के लिए कोई ढूंढ़ कर या एक ग्रदद झूठ बोल कर ...ह प्राणी का उद्धार कर सकती हैं। ...मती जी का दया करना तो दूर, ...पस्टिक पुते ग्रधरों से कुटिल मुस्कान ...र रसोई में चली जाती हैं ।

... को फाइलों का बोझ उतारकर ...चूर लड़खड़ाते कदमों से लौटता हूं ...क को तरोताजा करने वाले जर्दे ...की गिलौरी मुंह में दबाने को जी ...ता है ग्रौर घर की ग्रोर न लौटकर ...लू पान भंडार की ग्रोर बढ़ जाते ... मित्रों का हुजुम पहले ही योजना ...रीके से प्रतीक्षारत मिलता है। यदि ... को कानों कान सूचना मिल गई कि ... किसी रचना का पारिश्रमक ग्राया है तो ... चीज के लेखन की तारीफ के बेबुनियाद ...ल बंधने ग्रारम्भ हो जाते हैं। गर्मी का मौसम हुग्रा तो किसी का कुल्फी का दौर हो जाने ... मूड होता है ग्रौर दुर्भाग्य से सर्दी ... म हुग्रा तो चाय या कॉफी की ... हुई ग्रावाज निकलती है। कोई ... उठता है—'ग्राज तो 'राज' में ... लगी है ।' दूसरी ग्रावाज बहस के

... इन्दौरिया—श्री गंगानगर : जो ग्रपनी फोटो दीवाना फ्रैंडज क्लब में छपवाना चाहे उसमें क्या विशेषता होनी चाहिये ?

उ० : केवल इतनी सहनशीलता होनी चाहिये कि फोटो ग्रधिक होने के कारण हम जल्दी न छाप सकें तो वह रोने न लगे ।

गोविन्द दास रजिस्नेही—रायपुर : क्या हमारा देश कभी तरक्की कर सकता है ?

उ० : क्यों नहीं महंगाई, बेकारी, गरीबी, चोरबाजारी, जमाखोरी, कुनबावखोरी, रिश्वतखोरी, ग्राबादी, हर चीज तरक्की पर है ।

हरगुन जसवानी—मन्डला : चाचा जी, शादी के बाद दिल को राहत मिलती है या बेचैनी ।

उ० : क्या था दिल शादी से पहले,
मत पूछो ग्रब क्या किलकिल है ।
तब दिल को मसोसे रहते थे,
ग्रब हाथ लगाना मुश्किल है ।

एस० एम० राव—जमशेदपुर : चाचाजी, यह बताइये कि चाची ग्राप से कितना प्रेम करती हैं ?

उ० : जितना ग्रधिक से ग्रधिक प्रेम एक छुरी खरबूजे से कर सकती है ।

चन्द्र प्रकाश—मुराव रोड, बदायूं : हेमा मालनीकी शादी किस से होगी ?

उ० : ग्रभी तक तो कोई फैसला नहीं हुग्रा है । ग्राप भी चेहरे पर क्रीम पाउडर लगा कर ग्रौर वरमाला लेकर लाईन में लग जाईये । वैसे हम ग्रापको बता दें, कि शादी के उम्मीदवारों की लाईन इतनी लम्बी है कि बारी-बारी सबसे इंटरव्यू करने में हेमा मालिनी का एक-एक मिनट भी लगा तो ग्रापका नम्बर ग्राने तक इस पौडर लगे चेहरे पर झुरियों का जाल होगा ग्रौर पांव कि ग्रोर देखेंगे तो पता चलेगा कि कब्र में लटके हैं ।

रमेश चन्द्र कलाबाज—जनौली : डीयर अंकल ग्राप की महफिल में पहली बार कदम रख रहा हूं । जूते बाहर उतार ग्राऊं या पहने रहूं ?

उ० : हमारी महफिल में ग्राते समय ग्राप को जूतों की चिंता क्यों रही ? यहां ग्रभी किसी ग्राने वाले के लिये जूतों की कमी नहीं रही ।

शिवकुमार गुप्ता—जम्मू : मैं दीवाना के पुराने अंक मंगवाना चाहता हूं, इसके लिए क्या करूं ?

उ० : हमारे सर्कूलेशन विभाग को उन अंको के नम्बर भेजिये ग्रौर उनका मूल्य ग्रौर फिर

रूप में उभरती है—'नहीं, 'नारायण' में अच्छी फिल्म लगी है ।' फिर तीन घंटे की कैद या घंटे भर का चाय घर का शोरगुल न चाहते हुए भी ढोना ही पड़ता है ।

बोझ घुटन का हो या जेब का, ढोने का अब तो अभ्यास हो ही गया है । लेकिन मुसीबत इतनी ही नहीं है ।

जलवानियां मेरे हितैषी मित्र हैं । हर समय मेरी भलाई का ध्यान रखते हैं । कद के छोटे, देह से दुबले जलवानियां को देखकर सोचता हूँ, मेरे इस हितैषी मित्र को अपने उपनाम को सार्थक करने के लिए जल से भरे किसी समुद्र, तालाब या स्वीमिंग पूल में होना चाहिए था । लेकिन वह मेरे निकटवर्ती वातावरण को ही जल की लहलहाती गहरीली धार समझ डुबकियां लगाते हैं । ठीक उसी तरह की डुबकियां जैसे ह्वेल एक किनारे से डुबकी लगाकर अदृश्य हो जाती है और खोजने वाले हाथ मलकर रह जाते हैं । आपने किसी को कंकर-पत्थर मारते देखा होगा, या चाकू-बंदूक मारते देखा होगा । लेकिन मेरे मित्र जलवानियां पूरे पहाड़ के पहाड़ उठाकर मार देते हैं । यदि वे पहाड़ गप्पों के हुए तो क्या ? आखिर हैं तो पहाड़ ही । मार गप्पों की हो या जूतों की, कंकर की हो या गोली की, मार आखिर मार ही होती है । और गप्पों की मार तो इतनी बुरी होती है कि न शरीर पर चोट लगती न रक्त की एक बूंद ही शरीर से अलग होती लेकिन मस्तिष्क की नसें जो झनझना उठती हैं तो राहत की सांस लेना दूभर हो जाता है ।

गप्पों की मार से जख्मी मस्तिष्क तड़पता रहता है । मुसीबत के इन्हीं क्षणों के बीच 'नमस्ते' होती है शर्मा जी से । शर्माजी उम्र से जवान लेकिन शरीर से बूढ़े दिखने वाले सज्जन व्यक्ति हैं । उनके कुछ विशेष शौक हैं । जैसे रात-दिन बच्चों की बीमारी का ध्यान रखना, (यद्यपि उनके बच्चे केवल दो ही हैं) पर्याप्त वेतन पाते हुए भी महंगाई की मार के गीत गाना । तिनके भर कष्ट को दुनिया की सबसे बड़ी मुसीबत समझ कर नदान कान्फ्रेंस आयोजित करना आदि-आदि । शर्मा जी जब कभी मिलते हैं तो ऐसे समय जब मैं काम से मुक्त होता हूं लेकिन इतना थका होता हूं कि मन करता है एक घंटे बिस्तर पर पड़ा रहूं । लेकिन शर्मा जी मिलते और उनसे मिलना जरूरी है । बात करने के लिए उनके पास सिवा अपनी पत्नी और बच्चों की बीमारी के और कोई विषय नहीं है । मैं कितना ही प्रयास करूं, लेकिन वे उस आवर्त से बाहर नहीं निकल पाते । मैं मौसम की बात छेड़ता हूं तो कहते है—'हां, बहुत मनहूस मौसम है । मेरी बच्ची को बुखार आ गया । बबलू को खांसी का अटैक है ।' यदि वार्ता को राजनैतिक या साहित्यिक मोड़ देता हूं तो सफाई देते हैं—'आजकल सब बीमार हैं । इतना समय कहां कि अखबार पढ़ सकूं ?' जबकि गोयलजी की दूकान पर बैठे एक ही अखबार को घंटों तक चाटते रहते हैं । यदि मित्रों के बीच बैठते हैं तो अपने बबलू को जरूर साथ लिये होते हैं । और बार-बार पूछते हैं—'तबियत तो नहीं घबराती ? प्यास तो नहीं लगती ?' बीच-बीच में नब्ज देख लेते हैं । जिससे भी मिलते हैं अपने पेट की खराबी, बच्चों की बीमारी की ही चर्चा करते हैं ।



मेरे सबसे अधिक शुभचिंतक हैं वर्माजी । उन्हें हर समय मेरे स्वास्थ्य की चिंता रहती है । जब भी कुछ लिखता होता हूं, ठीक उसी वक्त तूफान की तरह आ धमकेंगे और कहेंगे—'तुम मेरी वजह से अपने लेखन में विघ्न मत डालो । आजकल बहुत अच्छा लिख रहे हो । पहले यह बताओ स्वास्थ्य तो अच्छा है न ? मैं तो केवल इतना ही जानने आया था । मुझे कितनी प्रसन्नता होती है यह देख कर कि मेरा एक मित्र लेखक के रूप में जाना जाता है अच्छा अब चलता हूं । मुझे तो तुम्हारे स्वास्थ्य के संबंध में ही जानना था । नमस्कार !' और चलते-चलते उत्साह से हाथ मिलाते समय मेरे हाथ को इतने जोर से दबायेंगे कि अंगुलियों के पोर झनझना उठते हैं और कुछ समय के लिए लिखना कठिन हो जाता है ।

कुछ और मित्र भी हैं जो मुझे नौकरी छुड़वाकर हर समय राजनीति में उतर आने को प्रेरित करते हैं या अपना स्वयं का मासिक पत्र निकालने की सलाह देते रहते हैं । उन्हीं में से कोई सलाह देते हैं—'क्या रखा है लेखन-वेखन में ? आजकल गुड़ का धंधा बहुत अच्छा चल रहा है । यदि एक बार कर लिया तो मालामाल हो जाओगे ।'

आप कहेंगे, मेरे भी कितने गलत विचार हैं । बिना मित्रों के जीवन नीरस होता है । और एक मैं हूं कि मित्रों से दूर भागता हूं । मैं अपने मित्रों को बुरा नहीं कहता । क्योंकि वे मेरी हरएक कठिनाई का ख्याल रखते हैं । मुझे प्रसन्न रखने के लिए मेरे निकट आते हैं । उनका उद्देश्य होता है मुझे लाभ पहुंचाना, लेकिन हो जाता है हरबार नुकसान । दिन-रात होते नुकसान से बचने के लिए नित्य प्रातः यही प्रार्थना करता हूं—'हे भगवान ! मुझे मेरे मित्रों से बचाओ !' पर मैं उनसे जितना दूर भागता हूं, वे मेरे उतने ही निकट आते हैं । आंखों के आगे भिखारी का चेहरा घूम जाता है । उससे मुझे ईर्ष्या होने लगती है । कितना भाग्यशाली है वह व्यक्ति जिसका कोई मित्र नहीं है । ●


भाइयों, जमाने की मांग पर ध्यान दो। अगर अपनी कम्पनी की तरक्की चाहते हो तो एक लेडी जासूस भर्ती कर लो। आजकल हर क्षेत्र में औरतें मर्दों का मुकाबला कर रही हैं। हर बड़ी कम्पनी में डायरेक्टर तक महिलायें हैं। लेडी जासूस से एक और फायदा होगा, जहां थारे थोबड़े देख दोस्त भी दुश्मन हो जाते हैं। वहीं उसका थोबड़ा देख दुश्मन भी दोस्त बन जायेंगे।
बात मार्के की है।
चूहा स्याना से।
मैं कल अखबार में एडवरटाइजमैंट दे देता हूं। फोटो सहित लेडी जासूसों के आवेदन मंगवाता हूं। थम देखोगे कि इस देश में कैसी-कैसी टैलेन्टेड लड़कियाँ भरी पड़ी हैं।
रेहाना, फर्जाना, लीला, रीटा, रीमा, रीना, मीना, टीना, रोजी, सोजी और सलमा की सलाइडें तो तुम देख ही चुके हो। अब यह देख लो, यह मैंने दो हजार आवेदनों में से चुन कर बीस अन्तिम चुनाव के लिये छांटी हैं।
यह कौन है? बायो डाटा पढ़।
यह है रूबी रुखसाना बी. ए., अलीगढ़, मसूरी १९७२ मिस,जासूसी का बचपन से शौक और योग्यताओं के खाने में लम्बी चौड़ी फेहरिस्त है।
वजन ६० किलो, रंग बादामी, दायें गाल पर तिल, नाप—छाती ३६ इंच, कमर २८ इंच और हिप ३६ इंच। टोटल लम्बाई पांच फुट साढ़े पांच इंच।
जूडो, जुजुत्सू, कुंग फू, बॉक्सिंग, स्त्रीलिंग, डाइविंग, फायर फाइटिंग फर्स्टएड, निशानेबाजी, घुड़सवारी, ड्राइविंग, बास्केट बाल व डिबेट में सर्टिफिकेट मिले हैं।
एकडेमिक एजुकेशन भी रूबी रुखसाना की बढ़ कर है, हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, चीनी, व पश्तो फर्राटे से बोल सकती है। इटेलियन, जर्मन, स्वीडिश, बांटू और नेपाली भाषायें काम चलाऊ रूप से समझ लेती है और टूटी-फूटी बोल लेती है।



इन सबमें रुबी रुखसाना ही सबसे ज्यादा योग्य नजर आती है। मुझे विश्वास है कि रुबी का चुनाव करके हम गलती नहीं कर रहे हैं। हां तो क्या लिखा ?
क्या बात से चौधरी भाई लोगों. थम दोनों आज अपने सबसे बढ़िया सूट पहन रिये हो। कपड़ों पर इंटीमेट सेंट की बोतलें उंडेल रहे हो ? बालों में बल डाल रिये हो ~ आज दफ्तर जाने की बजाय किसी की शादी में जाने का इरादा है क्या ?
दफ्तर जाने की तैयारी ही तो हो रही है यह।
अच्छा-अच्छा. आज रूबी ड्यूटी पर आने वाली है उसी के स्वागत में यह सब तैयारियां हो रही हैं।
मिस रूबी रुखसाना आइये इनसे मिलये। यही हैं दुनिया की मशहूर कम्पनी ए-वन फशकिलास जासूस कम्पनी के डायरेक्टर और चीफ ऑफ फील्ड ओपरेशंस। ये जो साहब काले सूट में हैं यह पी. पी. चौधरी एफ. आर. सी. एस. एम. बी. बी. एस. लन्दन आर. टी. डी. हैं। यही कम्पनी के डायरेक्टर और चीफ ऑफ जनरल स्टाफ हैं। उनकी बगल में धारीदार सूट में एस. बी. पांडे बी. ए. बी. टी. बी. एड. एम. कॉम कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी हैं। फील्ड ओपरेशंस के चीफ यही हैं। इन दोनों के निजी सैंकड़ों बीघे जमीन, कई-कई भैंसें और मुर्गियां गुड़गांवे में हैं।
गुड मार्निंग सर गुड मार्निंग सर।
लुक हियर मिस रूबी. आपका पहला मिशन ऑपरेशन सुकीयाकी होगा। रिमेम्बर ऑपरेशन सुकीयाकी।
सुकीयाकी
चीफ ऑफ फील्ड ओपरेशंस मिस्टर पांडे विल एकम्पनी यू। आप दो महीना तक प्रोबेशन पर काम करेगा। फिर अम आपका काम देख कर फैसला करेगा। पोर्ट पर जाकर आप दोनों को अमारा क्लाइंट का सूटकाएस लाना है। मिशन इज वैरी डेन्जरस वी केयरफुल।
डोंट वरी सर !
मिस रूबी. आपको घबराना का जरूरत नाई ए। सारा काम अम करेगा। आपको तो सिर्फ मेरे साथ इसलिये भेजा जा रहा है ताकि ऐसे कामों का आपको एक्सपीरियेंस हो जाये. बस। माइकेल डोमीने का सूटकेस पोर्ट पर से लाकर देगा अम।
लेकिन सर माइकेल डोमिनी तो कुख्यात स्मगलर है। अम क्रिमिनल
वह कोन है, क्या है. इससे अमको
एक सूटकेस पहुंचाने के लिये
अमको पता नहीं है सूटकेश में क्या है ? न ही जानना मागता है। नॉट अवर मरॉड रिस्पांसीबिलिटी। अब हमें यह कपड़े बदल एक्शन ड्रेस पहनना है।


रेडी मिस रूबी ? हमारा खाना होने का टाइम हो गया है। एक्शन सूट आपको फिट आ गया ?
यस सर इट इज सेटिसफेक्टरी। आई एम रेडी।
गुड, नाऊ लेट अस गो।
यस सर
चलते चलते मैं आपको जासूसी के फंमेडन्टल नियम बताऊंगा। रास्ता भी कट जायेगा। मिस रूबी जासूस का पहला ड्यूटी यही है कि उसे बोत चौकन्ना रहना होता है। आलवेज विजलेंट। थोड़ी सी गफलत भी बाजी हरवा सकती है। हमेशा सावधान।
यस सर ! आलवेज केयर फुल। वेरी केयर फुल।
जासूसी का सुनहरा सिद्धांत है यह हमेशा अपनी आंखें खुली रख कर चलो।
ओये, ऊह ! हां तो मैं कह रहा था कि जासूस को हमेशा आंखें अपनी खुली रख कर चलना चाहिये लेकिन यह अच नक अंधेरा कैसे हो गया।
सर आप खुले मेन होल में गिर पड़े हैं इसलिये अंधेरा नजर आ रहा है।
चोट वोट तो नहीं लगी आपको ?
हेह, हेह, हेह। चोट कैसे लगेगी, मैं तो जान बूझ कर इस मेन हाल में गिरा था। जो जासूस आंख खोल कर नहीं चलते उनकी क्या हालत होती है ? मैं प्रेक्टिकल डेमोन्स्ट्रेशन में विश्वास रखता हूं, थ्योरी में नहीं। हां हां हां मेरी आंख में कीचड़ घुस गया है।
अब कुछ भी हो ड्रेस तो वापिस मिल कर आपको बदलना ही पड़ेगा। नहाना भी ठीक रहेगा।
माइकेल डोमीनो ने कहा है कि नियमित रूप से उसके लि सूटकेस में कुछ अज्ञात माल इस बन्दरगाह पर आता पिछले एक महीने से काला चमगादड़ नामक एक लुटेरा मा केल के आदमी से बीच में ही सूटकेस छीन कर उड़नछू जाता है। आजकल काला चमगादड़ ने इस इलाके में बहु तहलका मचा रखा है। उसके बारे में कहा जाता है कि व चीते की सी फुर्ती से झपटता है। अकेला ही काम करता है लेकिन फिक्र दि गल नहीं। मैं उस जैसे बीस चमगादड़ों अकेले ही मार भगा सकता हूं। हमसे पाला पड़ेगा तो स पता लगेगा।
इसी जगे हमको माइकेल के आदमी का इन्तजार करना है। ठीक ग्यारह बजकर ग्यारह मिनट पर उसका आदमी आकर कोड वर्ड बोलेगा। हमें कोड का जवाब देकर सूटकेस लेना है। उसके बाद काले चमदागड़ से सूटकेस बचा कर माइकेल के घर पहुंचना है। ग्यारह बजने में अभी आधा घंटा बाकी है।
खड़े-खड़े सिलबिल सपनों में खो जाता है।
अगर काले चमगादड़ ने टांग अड़ाने की कोशिश की तो एक लेफ्ट हुक का ऐसा घूंसा मारूंगा कि जबड़ा टेढ़ा कर दूंगा। फिर गर्दन में हाथ फंसा कर कमर को झटका देकर सिर के ऊपर से उछाल कर पानी में फेंक दूंगा। रूबी मेरी बहादुरी देख कर मुझ पर आशिक हो जायेगी। मेरे प्रेम में गिरफ्तार हो जायेगी।
फिर हमारी शादी होगी और बच्चे भी होंगे। हम हनीमून के लिये गुलमर्ग जायेंगे। बड़ी एकान्त जगह है। शादी होगी तो बच्चे भी होंगे। घने बच्चे होंगे, जब बच्चों को बाजार घुमाने ले जाऊंगा तो रूबी कहेगी—
अजी, बाजार से हुए सब्जी ले आ
मम्मी मैं भी पापा के साथ जाऊंगी।



अगले अंक में रुबी का काले चमगादड़ ...

आपके पत्र

दीवाना का अंक नं: १८ मिला. पढ़कर मेरा दिल बहुत खुश हुआ । इस अंक में चिल्ली लीला. मोटू-पतलू, मदहोश, बन्द करो बकवास और परोपकारी बहुत ही अच्छे लगे। जैसे-जैसे मैं पढ़ता गया तो मेरी हंसी नहीं रुकी । मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूं कि आप दीवाना के पेज और बढ़ाओ और दीवाना का मूल्य भी बढ़ा दो । हमारी शुभ कामनायें आपके साथ हैं ।

अशोक कुमार मनोचा—नई दिल्ली

दीवाना का अंक १७ मिला । मुख पृ[illegible] को देखकर बहुत मजा आया । लेकिन चिल्ली लीला २२ अधिक पसंद नहीं आया । दीवानों चित्रकी तो सर्वाधिक पसंद आयी । बच्चे जमूरे, खेल-खेल में, काका के कारतूस [illegible] और कैसे, मोटू-पतलू तथा बिजली [illegible] बहुत पसंद आये । बास्केट ब[illegible] बिल्कुल पसन्द नहीं आया [illegible] सुझाव है कि उसकी जगह शही[illegible] शहीदों की जीवनी प्रकाशित का जाये । दीवाने अंकों में साफ प्रिंट न होने के कारण पढ़ने में दिक्कत होती है ।

भरत शर्मा—बिहार



दीवाना अंक नं. १७ पढ़ा । यह लिखने की तो जरूरत ही नहीं कि अंक कैसा लगा क्योंकि मैं दीवाना चार वर्ष से नियमित रूप से पढ़ता आ रहा हूँ, मुझे इसके सभी स्तम्भ पसंद हैं खास करके फैण्टम, मोटू-पतलू मदहोश, परोपकारी, सवाल यह है, पिलपिल सिलबिल आदि बहुत अच्छे लगते हैं । मैं आपसे एक अर्ज करना चाहता हूँ कि आप वर्ग पहेली [illegible] कर दें, इसकी जगह गुमनाम है कोई [illegible] चालू कर दें । आप मुख पृष्ठ पर [illegible] मांग कर न पढ़ें' जरूर लिखना शुरू कर दें क्योंकि मुझे दीवाना मांगने वाले बहुत तंग करते हैं ।

तहसिनुद्दीन—जाफराबाद

दीवाना' अंक १६ मिला, पढ़कर दिल इतना खुश हुआ जैसे की करोड़ों रुपयों का खजाना मिल गया । काका के कारतूस, चाचा चौधरी के [illegible] उत्तर, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू आदि सभी स्तंभों ने भरपूर [illegible] । हमारे यहां 'दीवाना [illegible] न पहुंचने के कारण [illegible]-छत दिल बेचैन हो [illegible]

[illegible]ारी लाल गौड—नागालैण्ड

दीवाना का अंक १७ प्राप्त हुआ । मुख पृष्ठ पर चिल्ली का चित्र देख कर हंसी का फव्वारा छूट पड़ा । बन्द करो बकवास [illegible] कारतूस, परोपकारी, सिलबिल-[illegible] सब अच्छे लगे । धारावाहिक उपन्यास मोनिका अच्छा है । इस अंक की अन्य सामग्री भी काफी अच्छी व मजेदार लगी । आशा है अगला अंक इससे अधिक रोचक होगा ।

ईश्वर कुमार—पंजाब

'दीवाना' का अंक १६ मिला, पढ़कर दिल गार्डन-गार्डन हो गया । सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, काका के कारतूस आदि सभी स्तंभों ने भरपूर मनोरञ्जन किया । धारावाहिक उपन्यास मोनिका रोचक चल रहा है । हमारे यहां 'दीवाना' कभी-कभी बहुत देर से पहुंचता है, जिसके कारण दिल बेहाल हो जाता है । नया स्तंभ 'पाठकों के चुटकले' शुरू करें, तो दीवाना में और भी निखार आ जायेगा ।

मोहरीलाल राजकुमार—नागालैण्ड

अखबार वाला सुबह-सुबह जब अखबार देने आया तो आवाज लगाता [illegible] रहा था 'धुंआ प्रूफ छाता सिर्फ-एक रुपया···सीमित स्टा[illegible] साथ लाने पर भी [illegible] लो···फटाफट !' आवाज सुनकर मैं घर से बाहर आया और दूर से ही 'एक मेरे लिये रख ले !' की आवाज उस अखबार वाले पर कस दी । गया मैं वहां, छाता लेने (हाय ! दीवाना) लेकर आ गया । आज पहली बार आभास हुआ कि 'दीवाना' तो है ही दीवाना पर इसके पाठक भी कम दीवाने नहीं । इस अंक में 'टैक्स के दीवाने रूप', 'पंचतंत्र' व 'चिल्ली लीला' फीचर विशेष पसंद आये ।

याद सुगन्ध—रिवाड़ी-१



सर्वश्रेष्ठ हास्य पत्रिका 'दीवाना' का अंक १७ मिला । ये अंक इस बार काफी रोचक लगा ! एक रुपये का हमें छाता मिला । मुख पृष्ठ अत्यन्त खूबसूरत था ! चिल्ली का 'प्रेम पत्र' अच्छा लगा और सभी कुछ अच्छा लगा किस की तारीफकरूं किसकी नहीं । इस बार 'सवाल यह है' अच्छा नहीं था । अब दीवाना यहां ठीक समय पर पहुंच जाता है । आपका बहुत-बहुत शुक्रिया ।

राजेश भुटानी—रिवाड़ी

दीवाना वाकई एक अच्छी पत्रिका है और इतनी अच्छी कि अगर दो दिन भी लेट हो जाये तो इसकी कमी महसूस होती है। बंद करो बकवास, परोपकारी, फिल्म पैरोडी इसके अलावा सभी स्थायी स्तंभों की दिल से तारीफ़ करता हूं और दूसरे अलफ़ाज़ों में ये कहना चाहिये कि मैं पत्रिका के फन का कायल हो गया हूं। अंक १५ में निगार कैसर के गजल नुमा पत्र ने काफी मुताअस्सिर किया। मैं इस पत्रिका की दिल से कामना करता हूं । आपको याद दिलादें कि अप्रैल का अंक १३ शाहजहांपुर नहीं आया इस कमी को पूरा करें ।

चन्द्र मोहन गौड़—शाहजहांपुर

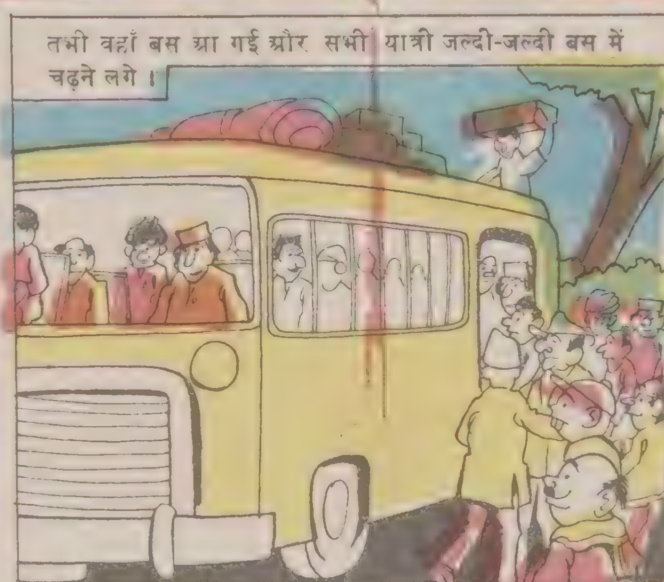
कोई भी अंक न मिलने पर अपने एजेन्ट से सम्पर्क कीजिये । —सं०

मोटू पतलू

● पिछले दिनों कुछ दीवाना प्रेमी चेलाराम से अपने दीवाना क्लब का उद्घाटन करवाना चाहते थे। डाक्टर झटका से कई बड़े नगरों में रोगियों की सुविधा के लिए फ़्री कैम्प खोलने की प्रार्थना की गई थी। मोटू-पतलू को कई जगह लोग टिमाटरों, डालडा के खाली डिब्बों, चाट के पत्तों और हज़ार-हजार और दस-दस हज़ार के नोटों में तोलना चाहते थे। और घसीटाराम जी इस ताक में थे कि कहीं भी किसी का तवा गर्म हो गया वह उस पर अपनी रोटियां सेंक लेंगे। इसी योजना के अनुसार हमारे हास्य कलाकार ग्वालियर, झांसी, इटार्सी और नागपुर के लिए रवाना हो गये। एक जगह वह बस का इन्तजार कर रहे थे कि चेलाराम एक अजीब चेहरा देखकर चौंक गया।












भई यह डाकू वाली बात भी अजीब है। वह इश्तहार पढ़ा था तुमने बस स्टैंड पर। क्या नाम है उसका? हां याद आया डाकू झांजर सिंह।
लिखा था, जिन्दा या मुर्दा पकड़ने वाले को या इसका पता बताने वाले को बीस हजार रुपया इनाम। वह किसी प्रकार अपना पता बता दे, तो अपना काम तो इससे ही चल जाएगा। पते की कौन-सी बात है। धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी राजेश खन्ना, जिससे पूछो वही अपना पता बता देता है।
सुना है चम्बल घाटी के डाकू यहाँ दूर-दूर तक वार करने लगे हैं। जयप्रकाश नारायण ने कुछ डाकूओं से हथियार तो डलवा दिये पर इस बात की गारन्टी उन्होंने कब ली है कि नये डाकू पैदा नहीं होंगे।
पता नहीं जयप्रकाश नारायण के पास नये डाकूओं का पता होगा या नहीं।
ओ खर्बूजे! पहले तू यह बता कि तेरा पता क्या है।
तभी बस में से दो आदमी उठे और हथियार तानकर बस ड्राइवर के पास पहुंच गए
गाड़ी रोक नहीं तो गोली से तुम्हारी खोपड़ी फाड़ दूंगा
और तुरन्त ही गाड़ी ब्रेक के एक तेज झटके के साथ रुक गई
अब इसे बाएं ओर कच्चे रास्ते पर मोड़कर जंगल में ले चलो।



ड्राइवर को जैसा आदेश मिल रहा था, जान बचाने के लिए वह वैसा ही कर रहा था और अब गाड़ी एक कच्चे रास्ते से होती हुई एक घने जंगल में घुस गई थी।
झांजर डाकू और उसका साथी।
हां वही है।
झांजर डाकू मेरे पास बैठा था और मैं इसी से इसे पकड़वाने के लिए इसका पता पूछ रहा था !
चुपचाप अपनी जगह बैठे रहो। किसी ने हिलने की कोशिश की तो गोलियों से उसका सीना छलनी कर दूंगा।
कुछ ही देर में गाड़ी वहां पहुंच गई जहाँ डाकूओं के दूसरे साथी भी मौजूद थे।
बस। गाड़ी रोक दो।
वह आ गई गाड़ी।
एक एक करके नीचे उतरो। हमें तलाशी दो और जो कुछ तुम्हारे पास है वह हमारे हवाले करते जाओ।
दवाओं के नुस्खे। कैप्सूल, इंजैक्शन मैं पूछता हूं पैसा कहां है पैसा ?
कैसा पैसा ? मैं तो रोगियों के लिए फ्री कैम्प लगाने आया हूं। तुम्हें कोई रोग चाहिए तो बात करो।
एक की जेब में से पांच रुपये सत्तर पैसे निकले हैं और दूसरे की जेब में से कंघा और शीशा। अब करेला तुम्हें हम दें सर पर रगड़ने के लिए।


कैंची ब्लेड रखते हो अपने पास ! जेब काटने के लिये । और यह पाँच सौ रुपये भी तुम्हारी जेब से निकले हैं । इतने रुपये तो अब तक किसी की जेब से नहीं निकले । बताओ, इतने रुपये कहां से आये तुम्हारे पास ?
मुझे पता नहीं । किसी ने मेरी जेब में हाथ डालकर और इसे अपनी जेब समझकर इसमें डाल दिये होंगे ।
बहुत अच्छे ! इतना छोटा सा लड़का अपनी जेब में लिये फिरते हो । ऐसा लड़का तो हमने आज तक नहीं देखा ।
इसे मुझे दे दो । यह मेरा भाई है ।
यह मेरा चाचा है, और तुम्हारी जेब की बजाए अब यह मेरी जेब में रहेगा ।
इस खूँसट के पास से यह रुपये निकले हैं और एक सोने की घड़ी ।
इस लड़की के गले में हीरे का हार क्या यहीं लटका रहेगा ?
डाकू ने सुमन के गले पर झटका मारकर इस जोर से हार खींचा कि वह दर्द से बिलबिला उठी ।
ओह ! मेरा गला ।
लड़की के पर्स में से यह कागज निकले हैं । इन में एक पत्र भी है ।
पत्र फुर्सत में पढ़ेंगे । जरूर इस में कोई चटखारा लेकर मजे से पढ़ने वाली बात होगी ।
पत्र लड़की के नाम नहीं । किसी लड़के पवन कुमार के नाम है और भेजने वाला उसका पिता मालूम होता है ।
प्राप्ति की बात करो । कोई मालदार पिता है क्या ?



हाँ, मालदार ही हैं सरदार। सोना, सोना ही सोना। ढेर सारा सोना, लिखा है। तुम घर छोड़कर गये तो मैं गरीब था। तुम्हारे लिए कुछ न कर सका। पर अब मुझे अपनें पुर्खों के दबे एक ऐसे खजाने का पता चला है, जहां ढेर सारा सोना है। अब में तुम्हारे लिए बहुत कुछ कर सकता हूं। यह सब सोना और सारी दौलत तुम्हारी ही है। पत्र देखते ही चले आओ। तुम्हारा पिता रामदास ग्वालियर
चलो! अब यह सोना हमारा है। ग्वालियर चलकर रामदास को पकड़ो।
हाँ, अभी चलो।
क्या बेवकूफों की सी बातें करते हो। हमें पता कैसे चलेगा कि रामदास कौन है और कहाँ रहता है। पहले इस लड़की को छोड़कर बाकी सबको पेड़ से बाँध दो।
ऐ लड़की, यह पवन कुमार कौन है?
वह लड़का अब कहाँ है?
कई साल पहले अपने पिता से किसी बात पर नाराज होकर हमारे यहाँ आया था और वह इतना भला था कि पिता जी उसे अपने फार्म की देखभाल के लिए अपने यहाँ रख लिया था। पिता जी अपने लड़के की तरह उसकी हर जरूरत का ख्याल रखते थे। कालिज में बी. ए. तक हम दोनों एक साथ पढ़े, फिर मैं आगे की पढ़ाई के लिए शंकर गढ़ चली गई।
मेरे पीछे से पिता जी ने उसे एक रोज देर से घर लौटने पर डांट दिया तो वह घर छोड़कर चला गया। अब पता चला है कि वह शंकर गढ़ में ही शाम रेस्टोरेंट में काम करता है।
शाम रेस्टोरेंट कहाँ है?
मुझे पता नहीं। सोच रही थी, पता लग जाता तो उसका यह पत्र उसे दे देती जो उसके पीछे से हमारे पते पर आया था।
मुझे पता है शाम रेस्टोरेंट कहाँ है, मैं उसके पास ही एक जगह एक क्लब का उद्घाटन करने जा रहा हूं।
बहुत अच्छे! फिर तो बात बन गई। इस लड़के को रस्सियों से बाहर निकालो।



आगामी अंक में इन बाजीगरों के नये-नये करतब देखना न भूलिये ।


छुट्टन-मिट्ठन और बच्चा झमूरे ने किया
भलाई का काम
हमें भलाई के काम का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहिये।
देखो वह एक औरत सड़क पार करना चाहती है और कर नहीं पा रही है।
आओ हम उसे सड़क पार करा दें।
देखो, डरो नहीं और हौसले से काम लो और पूरे विश्वास के साथ सड़क पार करने के लिए आगे बढ़ो।
अरे मर गया!
अपने विश्वास के साथ-साथ गाड़ी चलाने वालों के विश्वासघात का भी ख्याल रखो
पहले चारों तरफ देखो, फिर आगे बढ़ो।
क्या कर रहे हो? मेरा हाथ तो छोड़ो।
अरे मेरी टांग का कीमा बना दिया कम्बख्त ने।



मम्मी के प्यारे इन बच्चों से आगामी अंक में फिर भेंट करना न भूलिये।

खेल खेल में

जूडो

जूडो आज जिस रूप में विश्व में प्रचलित है उसका रूप १८८२ में जापान में तैयार हुआ था। यद्यपि २००० वर्ष पीछे तक इसके प्रचलन के प्रमाण मिले हैं। जूडो को वर्तमान रूप देने में डाक्टर जिगोरो कानो का प्रमुख हाथ है। उन्होंने जापानी हथियार रहित रक्षा पद्धति जुत्सू का गहरा अध्ययन किया और जूडो के नियम बनाये। जूडो को जानने वाला संतुलन व लीवर के वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग करते हुये अपने ही शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वी को पछाड़ देता है जूडो के माहिर को जूडोका पुकारा जाता



है। यद्यपि कई बार जूडोका बुरी तरह गिर पड़ता है परन्तु उसे चोट नहीं लगती क्योंकि जूडो की प्रथम ट्रेनिंग में ही इस प्रकार गिरने की शिक्षा दी जाती है कि चोट नहीं लगती। विभिन्न प्रकार के बैल्टों से जूडो जानने वालों का वर्गीकरण किया जाता है। इसमें बारह वर्ग है। दसवें वर्ग से आगे कोई नहीं बढ़ सका है। इस समय सबसे प्रवीण जूडो माहिर को ब्लैक बैल्ट मिलता है। जूडो क्षेत्र में काले बैल्ट पहने व्यक्ति को देखते ही सबकी सिट्टीपिट्टी गुम हो जाती है—भारत में भी इस समय लगभग छः ब्लैक बैल्ट हैं।

जूडो के दांव

१. कुमीकाटा—एक दूसरे को पकड़ने की प्रथम स्थिति।
२. उदे गारामी—बाजूओं की तालाबन्दी।
३. उत्सूरीमोशी—कमर का झटका।
४. उकेमी—आगे गिरने की तरकीव जिससे चोट नहीं लगती।
५. इप्पोन सीडोइनेज—एक बांह-कन्धे मे झटका।
६. योकोशिहोगाटामे—तीन चौथाई जकड़।
७. ताइओतोशी—शरीर के दायें या बायें एक ओर से पछाड़ना।
८. ओगोशी—मुख्य झटका कमर से देकर गिराने (की तैयारी में)।
९. टोमोएनागे—पेट से उछालना।
१०. हाने गोशी—झटकेदार कमर से उछाल फेंकना।
११. काताहाजिमे—गलफांसी।

अतहर असकर—जयपुर

प्र० : क्या भारतीय क्रिकेट टीम के विकेट कीपर सैयद किरमानी विश्व के अच्छे विकेटकीपरों में से आते हैं? और वे कहाँ के रहने वाले हैं?

उ० : हाँ, उनका प्रदर्शन किसी से उन्नीस नहीं है, वे कर्नाटक के हैं?

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

बिनोद लारीवास—गंगा नगर

प्र० : बिशन सिंह बेदी के लड़के का क्या नाम है जो आजकल बेदी के साथ आस्ट्रेलिया गया हुआ है उससे पत्र-व्यवहार का पता बतायें तथा उसकी उम्र कितनी है?

उ० : बेदी ने अपने मित्र गवास्कर के पीछे अपने पुत्र का नाम गवास इन्दर सिंह रखा है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्रहलाद असवानी—मण्डला

प्र० : क्या अब कभी भारत हाकी में विश्व चैम्पियन हो सकेगा?

उ० : उम्मीद का दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिये।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

ताराचन्द पोटानी—(म. प्र.)

प्र० : क्रिकेट में फालोऑन किस प्रकार दिया जाता है?

उ० : पहली इंनिंग्स में रनों में २०० या उससे अधिक का अन्तर रहने पर।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

राजेन्द्र कुमार अग्रवाल—बिलासपुर

प्र० : हाल ही में खेले गये मेलबोर्न में विश्व बिलियर्ड चैम्पियनशिप किसने जीती है?

उ० : भारत के माइकेल फरेरा—उसके पश्चात वह न्यूजीलैंड में भी विजयी रहे थे।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

पंकज माहेश्वरी—अमरोहा

प्र० : क्रिकेट के खेल में बाल डैड कब एवं कैसे हो जाती है?

उ० : जब बाल किसी खिलाड़ी या अम्पायर के कपड़ों या जेब में अटक जाये तो बालर या विकेट कीपर के हाथों में रह ही जायेतो अम्पायर डैड बाल का इशारा देगा। डैड बाल पर बना रन नही गिना जाता ओवर या टाइम डिक्लेयर करते समय तथा बल्लेबाज जब आऊट होकर जा रहा हो और नया आ रहा हो तो इस बीच के समय बाल डैड मानी जाती है, यानि सक्रिय नहीं है। इस बीच कोई वैसे ही रन बनाने का यत्न करे या स्टम्पस उखाड़ने लगे तो वह नहीं माना जाता।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सिद्धार्थ तापड़िया—अमरोहा

प्र० : जिम जैकब (अमरीका) किस खेल को खेलता था?

उ० : ये हैंड बाल के प्रसिद्ध एवं सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

रोशन मुखिजा—बम्बई

प्र० : आस्ट्रेलिया के विरुद्ध विश्वनाथ अच्छी बल्ले बाजी क्यों न कर सके?

उ० : भाई साहब, आप किस दुनिया में रहते हैं? विश्वनाथ ने तो आस्ट्रेलिया के दौरे पर सबसे अधिक रन बनाये।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अजय कुमार गुप्ता—तपकरा

प्र० : क्या पेले ने फुटबाल से सन्यास ले लिया है?

उ० : हां, वे रिटायर हो गये हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

संजय कुमार गुप्ता—तपकरा

प्र० : क्या बैडमिन्टन भी ओलम्पिक खेल में खेला जाता है?

उ० : नहीं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वालीबाल कैसे खेलें

वालीबाल का खेल संसार में बहुत लोकप्रिय है। यह २५ से अधिक देशों का मुख्य खेल मान्य हो चुका है। टीम बना कर खेले जाने वाले मनोरंजक तथा रोचक खेलों में संसार में वालीबाल खेल का तीसरा स्थान है।

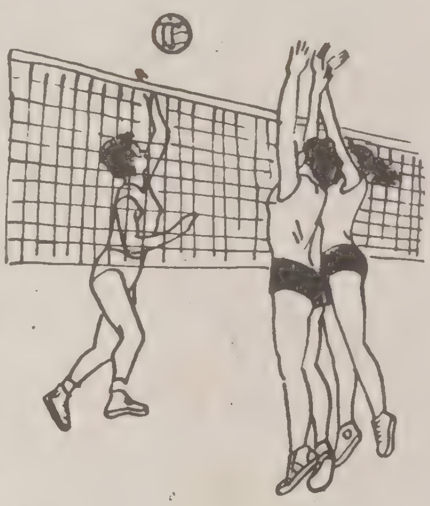
इस खेल की इतनी अधिक लोकप्रियता का कारण यह भी है कि यह बहुत सुगम और कम खर्चीला है। केवल एक बाल, एक जाल और थोड़ी-सी समतल भूमि की व्यवस्था हो जाने पर यह खेल सुगमता से खेला जा सकता है। इस रोचक खेल की यह भी एक विशेषता है कि इसे सीखने में अधिक समय नहीं लगता। छोटे-बड़े, वृद्ध-युवा तथा स्त्री-पुरुष कोई भी इस खेल को खेल कर मनोरंजन कर सकता है। इस खेल की यह भी विशेषता है कि इसे बाहर मैदान में और अन्दर एक बड़े कमरे में—दोनों जगह खेला जा सकता है।

इस खेल में यह सुविधा भी है कि वह दिन में और बिजली के पर्याप्त प्रकाश में भी खेला जा सकता है।

वालीबाल का खेल, खिलाड़ियों की दो टीमों के बीच खेला जाता है। छोटे-से स्थान में जाल के एक ओर के प्रांगण (कोर्ट) में एक दल होता है। इसी प्रकार दूसरी ओर के प्रांगण में दूसरा दल तैनात होता है। खेलते समय गेंद को हाथों द्वारा जाल (नेट) के ऊपर से इस प्रकार मारा जाता है कि वह मैदान को छूने न पाए।

वालीबाल खेल का आविष्कार सन १८९५ में अमरीका में हुआ। हालीऐक वाई० एम० सी० ए० व्यायामशाला के शारीरिक निदेशक विलियम जी० मार्गन को इस खेल का आविष्कर्ता माना जाता है। उन्होंने बास्केट बाल की बढ़ती हुई लोकप्रियता से प्रभावित होकर एक खेल का आविष्कार किया, जिसमें दो दलों द्वारा एक हवा भरे हुए 'बास्केट-बाल ब्लेडर' को एक रस्सी के ऊपर से बंट द्वारा मारा जाता था।

विलियम मार्गन एक ऐसा सुगम खेल चाहता था, जिसमें कम अथवा अधिक—हर तरह की शीरीरिक क्षमता वाले खिलाड़ी भाग ले सकें। जिस खेल को लगभग कहीं खेला जा सके। फलस्वरूप यह खेल अपने उद्देश्य में सफल साबित हुआ और धीरे-धीरे इस खेल ने 'वालीबाल का रूप धारण कर लिया। बाद में अपनी सुगमता के कारण यह खेल बहुत शीघ्र लोकप्रिय हो गया और सारे संयुक्त राज्य अमरीका में फैल गया। इस खेल के कारण वाई० एम० सी० ए० अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव द्वारा हर जगह जाना



जाने लगा।

खेल के विकास के प्रारम्भ में अमरीका के यंगमैन एसोसिएशन ने वालीबाल के कुछ नियम निर्धारित किये। इसके बाद सन् १९०० ई० के लगभग उनमें परिवर्तन किया गया।

सन् १९२२ बुकलीन (न्यूयार्क) में प्रथम बार वाई० एम० सी० ए० द्वारा राष्ट्रीय वालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

सन् १९२८ में यू० पी० एस० वालीबाल एसोसिएशन की स्थापना की गई। तब से लेकर हर वर्ष अमरीका में वालीबाल की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

यद्यपि वालीबाल खेल आविष्कार करने का श्रेय अमरीका को है, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अन्य देश अमरीका से भी आगे निकल गये।

वालीबाल खेल की लोकप्रियता का अनुमान तो इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि इस समय सारे संसार में लगभग ७ करोड़ व्यक्ति इस खेल में भाग लेते हैं। अकेले सोवियत रूस में ही ७० लाख से अधिक खिलाड़ी वालीबाल खेल को खेलते हैं। इस खेल के बड़े-बड़े मैचों को देखने के लिए भी लाखों व्यक्ति दर्शक के रूप में उपस्थित होते हैं। इस खेल की लोकप्रियता इसी से सिद्ध होती है कि संसार के लगभग २५ देश वाली-बाली के खेल को अपना प्रमुख खेल मानते हैं।

सन् १९३९-४५ के द्वितीय विश्व-युद्ध के समय इस खेल का बहुत प्रचार हुआ। सेनाओं के अनेक सैनिकों ने प्रशिक्षण के समय (अनेकों ने बन्दी कैम्पों में) वालीबाल खेल को सीखा। फिर विश्वयुद्ध की समाप्ति के दो वर्ष बाद १९४७ में अन्तर्राष्ट्रीय वालीबाल संस्था की स्थापना की गई।

गत कुछ वर्षों में वालीबाल खेल ने संसार भर में उल्लेखनीय प्रगति की है। पुरुषों तथा महिलाओं—दोनों के लिए राष्ट्रीय एवं सर्व-विजेता प्रतियोगिताओं (चैम्पियनशिप) का आयोजन होता रहता है।

सन् १९४५ में इस खेल को 'पैन अमरीकन खेलों' में सम्मिलित कर लिया गया। अब तो वालीबाल ने ओलम्पिक खेल के रूप में भी मान्यता प्राप्त कर ली है।

वालीबाल का खेल दो निर्धारित रूपों में खेला जाता है। प्रथम रूप में यह एक सीधा-सुगम मनोरंजक खेल है, जिसे युवक अथवा वृद्ध पुरुष और महिलाएं कहीं भी खेल सकते हैं।

खेल के दूसरे रूप में उसे एक अन्तर्राष्ट्रीय क्रीड़ा (स्पोर्ट) की भांति कुछ विशेष नियमों के अनुसार खेला जाता है। वाली-बाल, कैम्पों, युवक क्लबों और शिक्षा-संस्थाओं के लिए आदर्श रोचक खेल है। क्रीड़ा के रूप में भी इसका महत्व इस कारण है कि इसे खेलने के लिए खिलाड़ी में रफ्तार, स्फूर्ति तथा शारीरिक शक्ति का होना बहुत आवश्यक है।

इस खेल की सबसे अधिक विशेषता यह है कि इसे खेलने के लिए साधारण साधनों और औसत लम्बाई-चौड़ाई के समतल मैदान की जरूरत होती है।

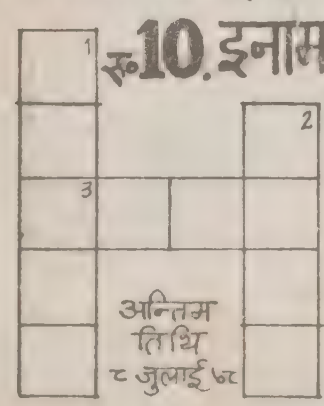
(क्रमशः)



फैणटम
और
डीयाना की नौकरी
तो तारकीमो जरू उतरना था··· क्या मैं पायलट से बात कर सकता हूं ?
जैसी तुम्हारी इच्छा·· लेकिन कोई फायदा नहीं होगा ।
तुम ताराकीमो में जहाज क्यों नहीं उतार सकते ?
कुछ गड़बड़ लगती है, हवाई अड्डा बन्द है । यू. एन. के अधिकारी किसी चक्कर में फंस गये लगते हैं ।
वो रहा राजधानी ।
मुझे वहीं उतरना है ।
हां छलांग लगाकर तो वहां पहुंच सकते हो··
ताराकीमो राजधानी देखने में तो पास ही है । मगर पहुंचने के लिए बहुत दूर है ।
क्षमा करना बन्धुजन हम वहां नहीं उतर सकते ।
मैंने कहा न कि मुझे वहां जरूर उतरना है !
और हम भी कह चुके हैं कि जहाज वहां नहीं उतार सकते ! जाओ अपनी सीट पर बैठ जाओ ।
तो क्या तुम अपहरणकर्ता हो ?
तुम्हारा कहना है कि वहां पहुंचने का सिर्फ एक ही रास्ता है··· छलांग लगाकर ।
इसका कहना मानो···इसके हाथ में पिस्तौल है ।
?
परिचारिका, मेरे लिये एक पेराशूट लाओ ।
जहाज को मैदान के चारों ओर घुमाते रहो मुझे किसी के घर के दरवाजे पर नहीं गिरना, समझे !
देखो तुम्हारा दिमाग फिर गया लगता है !
दिमाग नहीं फिरा पागल कहो, अच्छा सबको नमस्ते !
ओह ! अगर इसका पेराशूट न खुला तो ?
तब तो वह जरूर पागल हो जायेगा !
पेराशूट तो खुल गया !
वह वहीं उतरना चाहता था लेकिन उसके लिये बहुत बुरा होगा !
न जाने सभी लोग वहां क्यों उतरना चाहते हैं ?
अब हम क्या करें ?
हमें फौरन इत्तला देनी चाहिये !
वह कौन था ?
उसका नाम मि० वाकर* था बंगाला में आया था
*चलते फिरते भूत का दूसरा नाम



दीवाना वर्ग पहेली



संकेत

१. ऊपर से नीचे एक फिल्म का नाम बनता है।
२. ऊपर से नीचे उसी फिल्म से एक चरित्र अभिनेता का नाम है।
३. बायें से दायें उस फिल्म की हीरोइन का नाम है।
४. फिल्म के नाम [illegible] हीरोइन के नाम के प्रथम अक्षर मिलकर [illegible] करते हैं।

दीवाना पहेलियां

१. वह कौन सी कार है जिसमें बैठने का हमें हक है ?

२. वह कौनसा डर है जिसके कारण चेहरा सफेद पड़ जाता है ?

३. वह कौन-सा वार है जो सब घर वालों को मिलाता है ?

४. वह कौन-से पेड़े हैं जिन्हें खाकर आदमी डगमगा जाता है ?

५. वह कौन-सा देश है, जहां हुक्म मिलता है ?

उत्तर—अधिकार, पाउडर, परिवार, [illegible] [illegible]।

५. हीरोइन उल्टी औरत है।
६. चरित्र अभिनेता का नाम उसी अक्षर से शुरू और उसी से समाप्त होता है।
७. फिल्म के नाम का शुरू का अक्षर व चरित्र अभिनेता के नाम का दूसरा अक्षर [illegible] है।
[illegible]

प्रतियोगिता

निम्न पांच शब्दों के बोलते अक्षर बना कर भेजिये। सर्वश्रेष्ठ बोलते अक्षरों के सेट को पुरस्कार।
—बेमेल, लंगड़ा, पुच्छलतारा, चप्पल और मेंढक।

अन्तिम तिथि ८ जुलाई ७८

क्यों और कैसे

प्र० : सिलाई की मशीन सबसे पहले कब और कहां बनी थी ?

—अमृतराज—लुधियाना

उ० : सिलाई की मशीन के बारे में एक कथा प्रचलित है कि एक गवेषक संसार के सबसे पिछड़े भाग में गया जहाँ उसे सभ्यता का नामोनिशान मिलने की आशा न थी परन्तु वहाँ के मुखिया के झोंपड़े में सिलाई की मशीन देख अचम्भित रह गया। पता चला कि वे लोग पास के किसी सभ्य इलाके से किसी प्रकार वो मशीन उठा लाये थे।

मनुष्य के लिये सिलाई इतनी आवश्यक है कि उसके लिये मशीन का निर्माण एक अति आवश्यक कार्य था। मशीन के निर्माण की कहानी काफी दुःख भरी है, सबसे पहले सिलाई मशीन का निर्माण सन् १७६० में श्री थोमस सेन्ट नामक अंग्रेज ने किया था और इन्होंने ही आधुनिक सिलाई मशीन के समान चेन जैसा टांका लगाने वाली मशीन को सबसे पहले पेन्टेट करवाया था। ये मशीन अधिकतर चमड़े की सिलाई के लिये बनाई गई थी परन्तु इसका अधिक उपयोग न किया जा सका और इसी कारण निर्माता को इसका कोई लाभ न हो सका।

इसके बाद सन् १८३० में एक फ्रांसिसी दर्जी ने आधुनिक मशीन से मिलती जुलती एक और मशीन का निर्माण किया। इस मशीन का फ्रांस में प्रयोग भी हुआ परन्तु हाथ से सिलाई करने वालों ने, इसे अपने कार्य छिनने के डर से तहस-नहस कर दिया। इस मशीन के निर्माता थिम्मो निचर धनाभाव के कारण ही मरे।

लगभग इसी काल में अमरीका के श्री 'वालटेयर हन्ट' ने गोल सुई वाली मशीन बनाई। इसकी सुई का नाका, सुई की नोक पर था। ये सुई कपड़े में एक फंदा बनाती थी जो नीचे से जाते हुए धागे की सहायता से टांका बनाती थी। परन्तु 'हन्ट' अपनी इस मशीन को पेटेन्ट न करवा पाये। इस कारण सबसे पहली प्रयोग में आने वाली पेटेन्ट सिलाई मशीन बनाने का श्रेय 'श्री ऐलियस हो' को मिला। सन् १८५१ में श्री इस्साक सिंगर ने अमरीका में अपनी मशीन पेटेन्ट करवाई। श्री 'हो' तथा श्री सिंगर में इस में झगड़ा हुआ कि पहला पेटेन्ट का हक किस का है और इस केस में श्री 'हो' की जीत हुई और उस जमाने में प्रयुक्त हर प्रकार की मशीनों की रायलटी उन्होंने प्राप्त की। आजकल हजारों प्रकार की सिलाई मशीन बनती हैं। इनमें चमड़े, फेल्ट हैट, रजाई तथा बटन सीने की मशीनें भी सम्मिलित हैं।

प्र० : ग्लेशियर पहाड़ों पर कैसे चलते हैं जबकि उनका तापमान बहुत कम होता है और वह अपने आसपास के पानी को भी जमा देता है ?

—सुरेश पुरी, अमृतसर

उ० पर्वतों की घाटियों में सदा ही काफी ग्लेशियर पाये जाते हैं। घाटियों के ग्लेशियर ही सबसे आम होते हैं। अकेले ऐलप्स पर्वत पर ही लगभग १,२००से अधिक ग्लेशियर हैं और उत्तरी अलास्का की ऊंची पर्वत माला पर तो हजारों ग्लेशियर हैं।

घाटी ग्लेशियर बर्फीले पहाड़ों से बर्फ की बहुत बड़ी नदी के रूप में धीरे-धीरे चलते हैं। ये ग्लेशियर बर्फ के अथाह समूह से बनते हैं तथा इनका स्रोत घाटी का सिर होता है, जो कि चारों ओर से खड़ी दीवारों मे घिरी रंगभूमि के समान होता है। बर्फ हवा के साथ इस भाग में आ जाती है या हिम स्खलन के कारण इकट्ठी हो जाती है। ये गर्मियों में भी पिघलती नहीं है बल्कि हर वर्ष गहरी होती जाती है।

अन्त में ऊपर से बढ़ता दबाव तथा बर्फ का कुछ जमना तथा पिघलना मिलकर इस बर्फ के नीचे की वायु को बाहर कर देते हैं तथा ये बर्फ ठोस हो जाती है। फिर ऊपर से गिरती बर्फ के दबाव के कारण ये बर्फ का भारी समूह धीरे-धीरे घाटी में से खाई के नीचे की ओर खिसकने लगता है। जब ये ग्लेशियर बर्फ के प्रदेश से नीचे उतर जाता है तो इसके अग्रभाग की बर्फ पिघलनी आरम्भ हो जाती है। यदि ग्लेशियर के अग्रभाग की बर्फ के पिघलने की गति ग्लेशियर के चलने की गति के बराबर होती है तो उसके सामने का भाग आगे ही रहता है, परन्तु यदि बर्फ अधिक तीव्र गति से पिघलती है तो बर्फ का समूह पीछे को खिसक कर घाटी की ओर बढ़ जाता है। घाटी ग्लेशियर समुद्र में पहुंच कर बड़े-बड़े खंडों में बंट जाते हैं तथा हिम खंडों की रचना होती है।

प्र० : बादल का गरजना क्या है और ध्वनी कैसे होती है ?

—कु० ऊषा अनजानी, धनबाद।

उ० ऐसा सम्भव है कि बादलों की गरजन तथा बिजली के चमकने से ही संसार के आदिमानव प्रकृति के प्रति अचम्भित हुए होंगे। ऐसा कहा जाता है आकाश में चमकती बिजली की टेढ़ी रेखायें देख तथा बादल का गरजन सुन उस काल का मानव भयभीत हुआ तथा समझा कि देवता उनसे रुष्ट होकर उन्हें दंडित करना चाहते हैं।

बादल के गरजने तथा बिजली की चमक के बारे में जानने के लिये विद्युत सम्बन्धी अपने ज्ञान को टटोलना पड़ेगा। हमें पता है कि विशेष वातावरण में वस्तुओं में पोजीटिव तथा नेगेटिव प्रवाह उत्पन्न हो जाता है तथा पोजीटिव और नेगेटिव प्रवाह एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और जैसे-जैसे प्रवाह बढ़ता जाता है वैसे-वैसे इन वस्तुओं को किसी भी प्रतिरोधी (जैसे वायु) द्वारा अलग रखना असम्भव हो जाता है। तथा इन दोनों समूहों के पास आते ही कुछ अतिरिक्त प्रवाह निर्मुक्त हो जाता है जिससे दोनों समूहों में विद्युत प्रवाह बराबर हो जाये। ये अतिरिक्त विद्युत ही हमें बिजली के रूप में दिखाई देती है।

वायु की विद्युत संचालन क्षमता उसके घनत्व तथा सीलन पर निर्भर है। खुश्क वायु अच्छे विद्युत रोधी का काम करती है तथा सीली हवा विद्युत प्रवाह में सहायक होती है। यही कारण है कि वर्षा आरम्भ होते ही बिजली चमकनी कम हो जाती है।

प्रकाश की गति १८६,२८४ मील प्रति सैकेण्ड है तथा ध्वनि वायु में से १,१०० फीट प्रति सैकेन्ड की गति से चलती है। इसलिये प्रकाश हमें पहले दिखता है तथा बादलों की गड़गड़ाहट बाद में सुनाई देती है।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक.
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

सात दूनी चौदह

डा० हरिश्चन्द्र पाठक

किसी भी बात में बनारस का जिक्र आते ही मेरे दिमाग में एक घटना कौंध जाती है। यह घटना मेरे विद्यार्थी जीवन की है। विद्यार्थी जीवन को 'गोल्डन लाइफ' कहा जाता है और संयोगवश अगर यह लाइफ छात्रावास में गुजरे तो सोने में सुहागा समझना चाहिए।

गर्मियों के दिन थे। एक रोज एक मित्र ने बनारस-यात्रा का कार्यक्रम बनाया तथा उसमें सम्मिलित होने के लिए मुझे भी आमंत्रित किया। रात को 'मैस' में खाते समय मैंने अपने अन्य साथियों से इस कार्यक्रम की चर्चा की तो दो दिन की छुट्टियां होने के कारण उनमें से भी कुछ लोग साथ चलने को तैयार हो गए और करीब डेढ़ घण्टे बाद छात्रावास से हम सात लोग अपने कंधों पर थरमस, दूरबीन, कैमरा या झोले लटकाए हुए रेलवे स्टेशन की ओर चल दिए।

रेलवे स्टेशन एक ऐसी पवित्र जगह होती है, जहां आम आदमी को पानी पीने के लिए गिलास, खाना खाने के लिए थाली, बैठने के लिए कुर्सी या लेटने के लिए खाट की आवश्यकता नहीं पड़ती तथा आम रेल का डिब्बा एक ऐसी खचाखच जगह होती है, जहां बैठने के स्थान पर लेटा जाता है, खड़े होने के स्थान पर बैठा जाता है और प्रवेश द्वारों पर खड़े होने की परम्परा है। इन डिब्बों में पर्याप्त खिड़कियां होने के कारण जहां एक ओर यात्रियों को कहीं से भी प्रवेश प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त होती है, वहीं दूसरी ओर बीड़ी एवं सिगरेट का कोहरा भी प्राणघातक होकर छाने से पहले ही छंट जाता है। ऐसे ही एक डिब्बे में शौचालय के पास चादर बिछाकर हम लोग ताश खेलने लगे। गाड़ी चलने लगी। वक्त कटने लगा। रात ढलने लगी। सुबह होने लगी। चिड़ियां चहकने लगीं। बनारस आ गया।

सुबह जरूर थी, मगर उसमें ताजगी की अपेक्षा उमस ज्यादा थी। अतः सर्वप्रथम नहाने के उद्देश्य से दशाश्वमेध घाट जाने का विचार किया गया और हम लोग रिक्शों पर सवार हो गए। जिस तरह रेलवे स्टेशन से बाहर निकलने पर रिक्शे-तांगे वाले यात्रियों को घेर लेते हैं, ठीक उसी तरह घाट पर पहुँचते ही कुछ ऊंची धोती पहने हुए कंधों पर गमछा डाले हुए लोगों के 'बोर्ड' ने हमारा 'इण्टरव्यू' लेना शुरू कर दिया, 'कहाँ से पधारे ? क्या स्नान करेंगे ? गोदान करा दें ? चलिए स्नान-ध्यान, दर्शन-पूजन सब कुछ करा देंगे, इत्यादि।'

हम लोग इन विभूतियों को टालते हुए किसी तरह आगे बढ़ते रहे। घाट पर जाकर नाव तय की। पार गए। नहाया-धोया। फोटो भी खींचे पर वहां से लौटने पर हमें फिर वही चेहरे अपने चारों ओर मँडराते हुए नजर आने लगे। वही प्रश्नवाचक मुद्रा और वही प्रश्न। इस बार उनमें एक नया व्यक्ति और शामिल हो गया था, जिसकी धोती अपेक्षाकृत लम्बी और साफ थी। माथे पर तिलक की छटा और मुखमण्डल पर 'पंडित जी' की सी उदारता थी। यह 'पंडित जी' मुझसे कहने लगे—'कहां से आए हैं भय्या लोग ? चलें दर्शन-पूजन कराय दें।'

मैंने केवल सिर हिलाकर मना कर दिया। हम लोग बाबा विश्वनाथ के मंदिर की ओर जाने वाली एक गली में मुड़ गए। अभी कुछ ही दूर चले होंगे कि अलग-अलग तोल के 'पोलीथीन' 'पेकेट्स' में इलायचीदाने बेचने वाली एक छोटी सी दूकान के पास खड़े वही 'पंडित जी' मुस्करा रहे थे और अचानक आगे बढ़ कर बोले—'जबाव नाहीं मिला, भय्या लोग को दर्शन कराय दें।' हम लोग रुके नहीं। चलते-चलते ही मैंने कह दिया कि—'आप क्यों तकलीफ उठाएंगे, हम खुद ही दर्शन कर लेंगे।'

हमें न तो कोई जल्दी थी और न ही कोई चिन्ता। जिधर जी आता मुड़ जाते थे, बढ़ जाते थे, पर हमने यह अनुभव किया कि हम जिधर भी मुड़ते या बढ़ते थे, उधर ही वही 'पंडित जी' अत्यन्त विनीत भाव से मुस्कराते हुए अवश्य दिख जाते थे। मेरे साथियों ने भी उनमें दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी, जिसके परिणाम स्वरूप वह हमारे गाइड बनकर हमें बाबा विश्वनाथ के मंदिर ले गए। वहां से वह हमें अन्य कई मंदिरों के दर्शन कराते, समझाते-बुझाते अंत में एक ऐसे मंदिर में ले गए, जिसमें मुख्य द्वार से प्रवेश करने के उपरान्त सीढ़ियों से नीचे को उतरना पड़ता था। वहां शिवलिंग के पास बैठे पुजारी जी ने हमें देखते ही गंभीरता ओढ़ ली और अपने समीप बैठने का इशारा किया। 'पंडित जी' ने मुझे नहीं बैठने दिया और मेरा हाथ पकड़कर एकांत में ले गए। एक स्थान से एक हरी सी फलनुमा घास उठाकर बोले—'इस तिनके से इस दीवार पर अपनी मनोकामना लिख दो।'

—'मेरी कोई मनोकामना नहीं है।' मैंने कहा।

—'अच्छा आपके पिता जीवित हैं ?' 'पंडितजी' ने पूछा। मैंने स्वीकृति सूचक सिर हिला दिया।

—'माताजी ?'

—'वह भी हैं।'

—'विश्वनाथ जी उन्हें दीर्घायु करें। हमारी दक्षिणा दीजिए।'

—'कितनी ?'

—'जो आपकी श्रद्धा हो।'

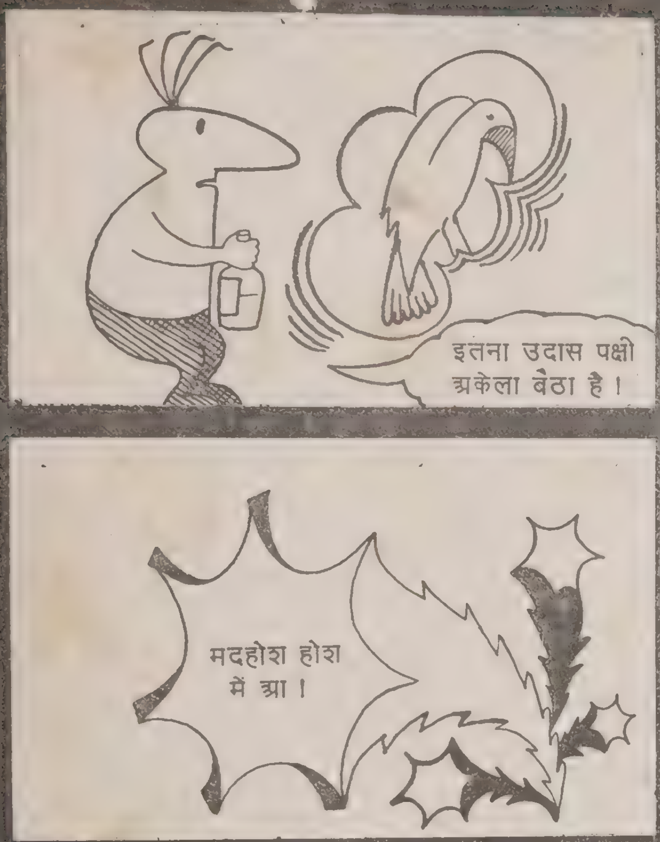
मैंने बुश्शर्ट की जेब में पड़े हुए दस और पांच पैसे के सिक्के निकालकर उन्हें दिखाते हुए कहा—'मेरे पास यही दो सिक्के हैं, आप ले सकते हैं।'

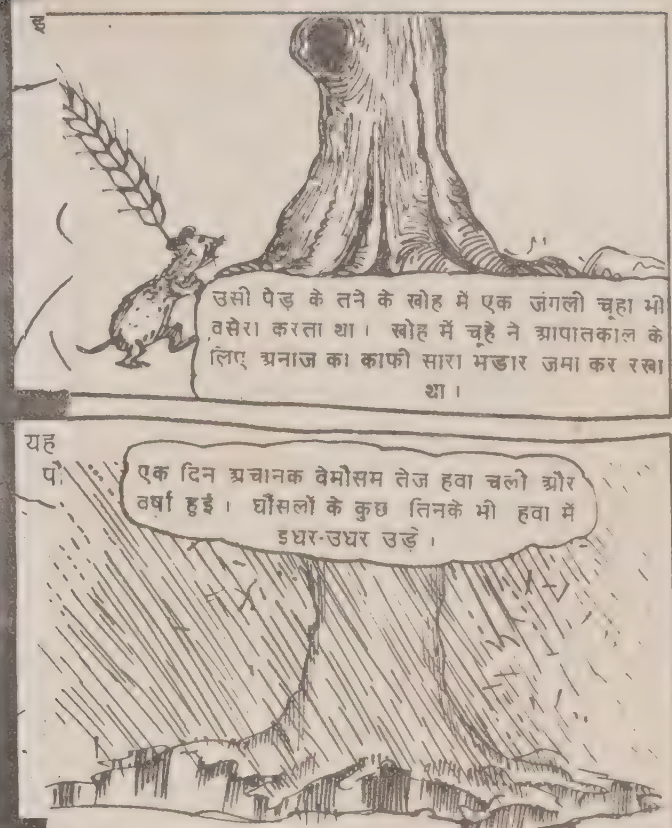
—'क्यों शरमिन्दा कर रहे हैं ? क्या काम करते हैं आप ?'

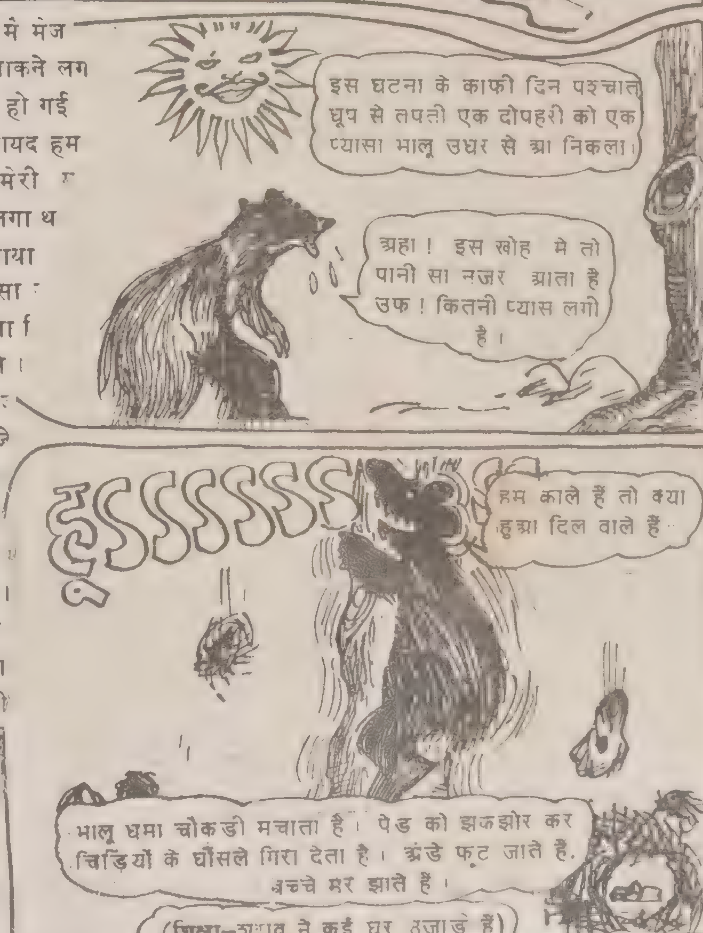
—'विद्यार्थी हैं।'

यह सुनकर 'पंडित जी' ने मेरी हथेली से पन्द्रह पैसे उठाकर अपनी जेब के हवाले किए और समीप से कुछ फूल-पत्ते लाकर मेरी अंजलि में रख दिए। फिर मेरी दोनों हथेलियों को गोलाकार रूप में बंद करके उसी हालात में पकड़कर वहां ले आए जहां पुजारी जी व मेरे साथी बैठे थे। 'पंडितजी' ने मुझे नीचे बिठाकर एक हाथ से मेरा सिर जमीन तक झुका दिया तथा दूसरे हाथ से मेरी अंजलि खुलवाकर पुष्पांजलि चढ़वा दी। मैं सीधा हुआ, पुजारी जी ने तिलक लगाकर आशीष दिया और मेरे दूसरे साथी को मेरी ही तरह एकान्त में ले गए, मनोकामना लिखवाई, दक्षिणा चढ़वाई। मैं मन्दिर की अन्य छोटी-मोटी मूर्तियों के शिल्प का अव-

मदहोश







लोकन करता रहा। सबके निबटने के बाद हम लोग पुजारी जी और 'पंडित जी' से विदा लेकर मन्दिर से बाहर आ गए और चौराहे की प्रसिद्ध पूरी-कचौड़ी की दूकान की तरफ बढ़ने लगे।

दूकान पर मेज घेरने के बाद सबसे पहले पानी पिया। पानी पीने के बाद एक साथी ने मुझसे कहा—'यार! तुमसे हमें यह उम्मीद नहीं थी।'

—'क्या?' मैंने विस्मित होकर पूछा।

—'यही कि तुम दो रुपए चढ़ा दोगे।' वह बोला।

—'मैंने तो नहीं चढ़ाए दो रुपए।' मैंने कहा।

—'क्या कह रहे हो भई! सबसे पहले तुम्हीं ने तो दो रुपए चढ़ाए थे।' दूसरा साथी बोला।

—'तुम्हारी वजह से हमें भी दो-दो रुपए का जबरदस्ती चूना लग गया।' तीसरे ने कहा।

—'बिना बात के रुपए झड़ गए गुरु! और तुम कह रहे हो कि तुमने दो रुपए ही नहीं चढ़ाए। आखिर माजरा क्या है?' चौथे ने पूछा। पर मेरी समझ में कुछ भी

नहीं आ रहा था। मैं मेज
हुए 'बैरे' का मुंह ताकने लग
—'क्या बात हो गई
खुद पूछ लिया। शायद हम
बातें सुनकर तथा मेरी
मामले को समझने लगा थ
के संदर्भ में यह बताया
नहीं चढ़ाए तो सहसा
—'आपने क्या
—'पन्द्रह पैसे।
—'महाराज
'हां उठाकर जे
'...और आपने
कर आपके हाथ में
—'नहीं तो,
रक्खी थीं, हाथ में।
—'यहीं आप
वह दो रुपए महारा
निकाल कर आपकी
—'ऐसा उन्है
किया?'
—'यही तो
जाते हैं कि कि
और उन्हें

सात दूनी चौदह

डा० हरिश्चन्द्र पाठक

किसी भी बात में बनारस का जिक्र आते ही मेरे दिमाग में एक घटना कौंध जाती है। यह घटना मेरे विद्यार्थी जीवन की है। विद्यार्थी जीवन को 'गोल्डन लाइफ' कहा जाता है और संयोगवश अगर यह लाइफ छात्रावास में गुजरे तो सोने में सुहागा समझना चाहिए।

गर्मियों के दिन थे। एक रोज एक मित्र ने बनारस-यात्रा का कार्यक्रम बनाया तथा उसमें सम्मिलित होने के लिए मुझे भी आमंत्रित किया। रात को 'मैस' में खाते समय मैंने अपने अन्य साथियों से इस कार्यक्रम की चर्चा की तो दो दिन की छुट्टियां होने के कारण उनमें से भी कुछ लोग साथ चलने को तैयार हो गए और करीब डेढ़ घण्टे बाद छात्रावास से हम सात लोग अपने कंधों पर थरमस, दूरबीन, कैमरा या झोले लटकाए हुए रेलवे स्टेशन की ओर चल दिए।

रेलवे स्टेशन एक ऐसी पवित्र जगह होती है, जहां आम आदमी को पानी पीने के लिए गिलास, खाना खाने के लिए थाली, बैठने के लिए कुर्सी या लेटने के लिए खाट की आवश्यकता नहीं पड़ती तथा आम रेल का डिब्बा एक ऐसी खचाखच जगह होती है, जहां बैठने के स्थान पर लेटा जाता है, खड़े होने के स्थान पर बैठा जाता है और प्रवेश द्वारों पर खड़े होने की परम्परा है। इन डिब्बों में पर्याप्त खिड़कियां होने के कारण जहां एक ओर यात्रियों को कहीं से भी प्रवेश प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त होती है, वहीं दूसरी ओर बीड़ी एवं सिगरेट का कोहरा भी प्राणघातक होकर छाने से पहले ही छंट जाता है। ऐसे ही एक डिब्बे में शौचालय के पास चादर बिछाकर हम लोग ताश खेलने लगे। गाड़ी चलने लगी। वक्त कटने लगा। रात ढलने लगी। सुबह होने लगी। चिड़ियां चहकने लगीं। बनारस आ गया।

सुबह जरूर थी, मगर उसमें ताजगी की अपेक्षा उमस ज्यादा थी। अतः सर्वप्रथम नहाने के उद्देश्य से दशाश्वमेध घाट जाने का

विचार किया गया अ डाक बही में रखने के
पर सवार हो गए।
से बाहर निकलने । उसे नहीं पहुंचाता तो मैं
यात्रियों को घेर लेते हैं।
घाट पर पहुँचते हो ाकर कहो। जाओ उसे
हुए कंधों पर गमछा ंचर ने चपरासी को अन्दर
ने हमारा 'इण्टरव्यू' हब ने पूछा—तुमने वह
'कहाँ से पधारे ? क्यों नहीं पहुंचाई।
करा दें ? चलिए स्न में उसे लेकर दो बार
सब कुछ करा देंगे, इ रिसीव करने वाला ही
हम लोग इन वि
किसी तरह आगे बढ़ते बार क्यों नहीं गए ?
नाव तय की। पार ग
फोटो भी खींचे पर वहां हूं साऽऽब !
फिर वही चेहरे अपने च मादार को यहा भेज
हुए नजर आने लगे। व
और वही प्रश्न। इस ब आकर जमादार को
व्यक्ति और शामिल हो हीं मिला। अन्दर साहब
धोती अपेक्षाकृत लम्बी ा था, मगर वह क्या
पर तिलक की छटा ार आया तो उससे कह
'पंडित जी' की सी उ ा रहे हैं। जमादार अन्दर
जी' मुझसे कहने लगे ड़ा हो गया। साहब
भय्या लोग ? चलें दर्श हां थे ?
मैंने केवल सिर हि के लिए सिगरेट लाने
दिया। हम लोग बाबा वि
की ओर जाने वाली एक ग क्यों नहीं गए ? तुम
अभी कुछ ही दूर चले होंगे
तोल के 'पोलीथीन' 'पेकेट्स' रकार !
बेचने वाली एक छोटी सी दू हीं होना चाहिए।
खड़े वही 'पंडित जी' मुस्करा !
अचानक आगे बढ़ कर बोले— भेजो।
मिला, भय्या लोग को दर्शन क अन्दर जाने का
लोग रुके नहीं। चलते-चलते ह र से कश खींच
दिया कि—'आप क्यों तकलीफ ओर बढ़ा दी और
खुद ही दर्शन कर लेंगे।' र की ओर चल
हमें न तो कोई जल्दी थी
कोई चिन्ता। जिधर जी आता सैंटर टाइप हो
बढ़ जाते थे, पर हमने यह अनु
हम जिधर भी मुड़ते या बढ़ते है।
वही 'पंडित जी' अत्यन्त विनी दा क्यों है ? तुम
मुस्कराते हुए अवश्य दिख जाते
साथियों ने भी उनमें दिलचस्पी लेनी कैशियर

कहां हैं ?

—अभी भेजता हूं।

स्टेनो ने बाहर आकर कैशियर की तरफ मुस्काते हुए अजीब सी भाव-भंगिमा बनाई और कैशियर अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। फिर कुछ सोचते हुए गंतव्य की ओर बढ़ गया। उसने पहुंचते ही सुना—कल लंच के बाद कहां थे ?

—मिश्रा के साथ ट्रेजरी गया था।

—मिश्रा कौन होता है ? तुम्हारा आफिसर वह है या मैं ? मेरी इजाजत के बगैर तुमने दफ्तर कैसे छोड़ा ?

—आपके टी. ए. बिल लेकर ही गया था।

—फिर भी मुझसे पूछना चाहिए था। तुम बहुत सुस्त हो।

—गलती स्वीकार करता हूं।

—आइंदा ख्याल रखना।

कैशियर बाहर निकल आया। अपनी कुर्सी पर लुढ़कते हुए जम गया। हर मेज पर मनहूसियत सी छा गई थी। सभी को सुस्तराम का तगमा बांधा जा चुका था। लंच टाइम होते ही सारे के सारे कैंटीन की तरफ चल दिए और रास्ते में एक दूसरे से पूछने लगे कि तुम्हें क्यों बुलाया गया और तुमसे क्या कहा गया ? इन प्रश्नों की भांति सभी के उत्तर भी समान थे कि हमें बेमतलब बुलाया गया और हमसे कहा गया कि 'तुम बहुत सुस्त हो'।

यह जानकर सभी दंग थे कि आज सभी को अकारण ही घुमा फिरा कर सुस्त क्यों कहा जा रहा है। कैंटीन से बड़े बॉस का स्टेनो चला आ रहा था। दुआ-सलाम के बाद उसने डिस्पैचर से प्रश्न किया कि—आज सुबह सवा दस बजे तुम्हारे आफिस में किसी ने फोन क्यों नहीं उठाया ?

—सवा दस बजे तो मैं पहुंचा ही नहीं था।

साढ़े दस बजे ?

—तब तो साहब आ गए थे।

—आज उन्होंने सुबह-सुबह डांट खा ली।

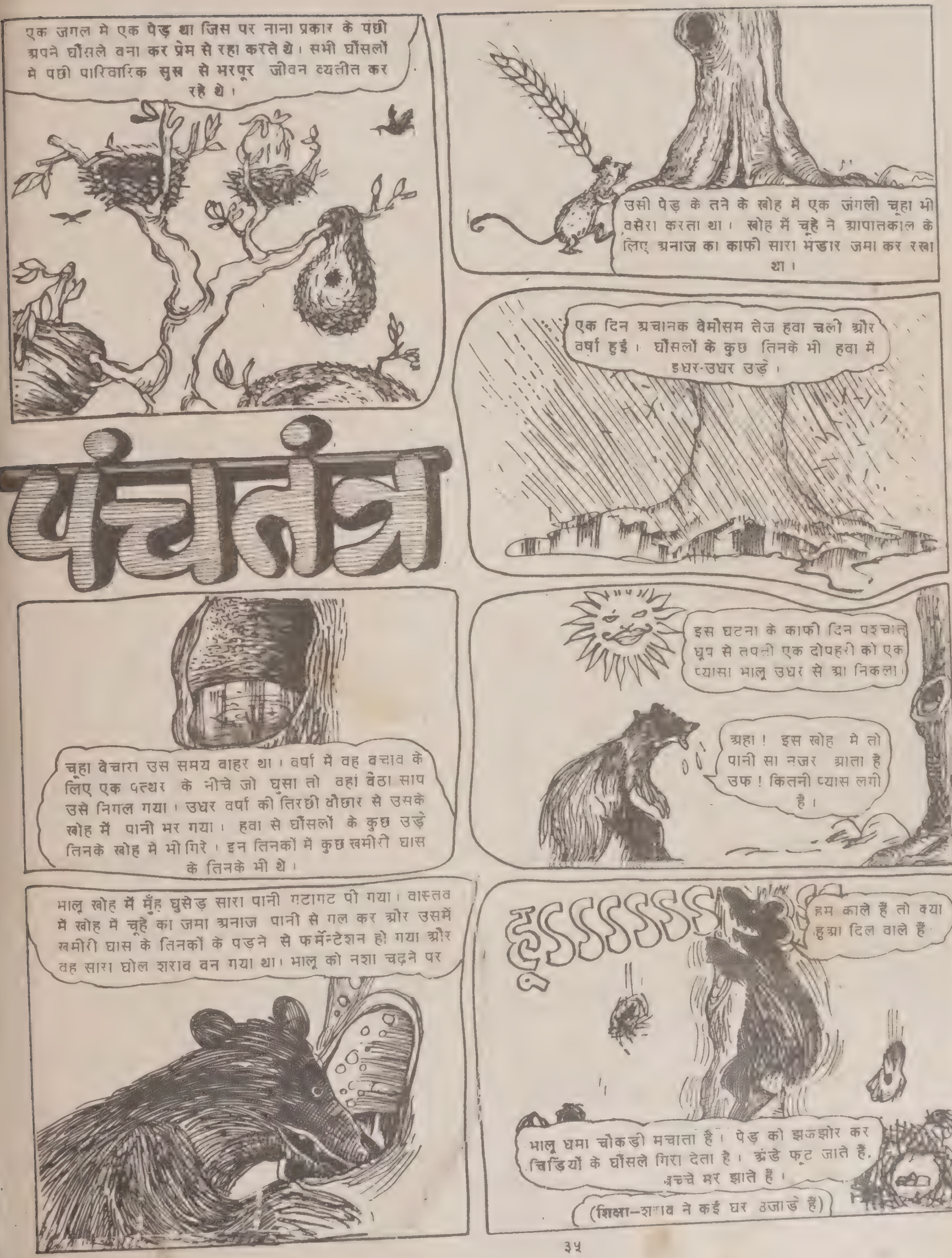
—किसने डांटा ?

—बड़े बॉस ने।

—क्या कहा ?

—यही कि—'तुम बहुत सुस्त हो।'

यह सुनते ही सभी के उदास चेहरे उछल कर अट्टहास करने लगे। ●


एक जगल मे एक पेड़ था जिस पर नाना प्रकार के पंछी अपने घोंसले वना कर प्रेम से रहा करते थे। सभी घोंसलों मे पंछी पारिवारिक सुख से भरपूर जीवन व्यतीत कर रहे थे।
उसी पेड़ के तने के खोह में एक जंगली चूहा भी वसेरा करता था। खोह में चूहे ने आपातकाल के लिए अनाज का काफी सारा भंडार जमा कर रखा था।
पंचतंत्र
एक दिन अचानक वेमौसम तेज हवा चली और वर्षा हुई। घोंसलों के कुछ तिनके भी हवा में इधर-उधर उड़े।
चूहा वेचारा उस समय वाहर था। वर्षा में वह वचाव के लिए एक पत्थर के नीचे जो घुसा तो वहां वैठा साप उसे निगल गया। उधर वर्षा की तिरछी बौछार से उसके खोह में पानी भर गया। हवा से घोंसलों के कुछ उड़े तिनके खोह मे भी गिरे। इन तिनकों में कुछ खमीरी घास के तिनके भी थे।
इस घटना के काफी दिन पश्चात् धूप से तपती एक दोपहरी को एक प्यासा भालू उधर से आ निकला।
आहा! इस खोह मे तो पानी सा नजर आता है उफ! कितनी प्यास लगी है।
भालू खोह में मुँह घुसेड़ सारा पानी गटागट पी गया। वास्तव में खोह में चूहे का जमा अनाज पानी से गल कर और उसमें खमीरी घास के तिनकों के पड़ने से फर्मेन्टेशन हो गया और वह सारा घोल शराव वन गया था। भालू को नशा चढ़ने पर
हूऽऽऽऽऽऽऽ
हम काले हैं तो क्या हुआ दिल वाले हैं
भालू धमा चौकड़ी मचाता है। पेड़ को झकझोर कर चिड़ियों के घोंसले गिरा देता है। अंडे फूट जाते हैं. बच्चे मर जाते हैं।
(शिक्षा—शराव ने कई घर उजाड़े हैं)

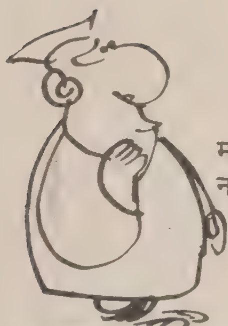
गर्मी पर एक दीवानी नजर



सूरज गर्मी का कारण है। गर्मियों में किस व्यक्ति को सूरज क्या नजर आता है वह इस फीचर में पढ़िये।

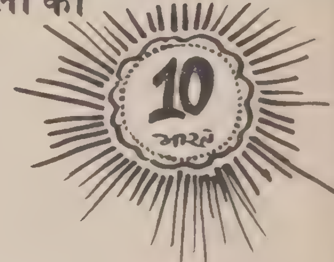
मंत्री को

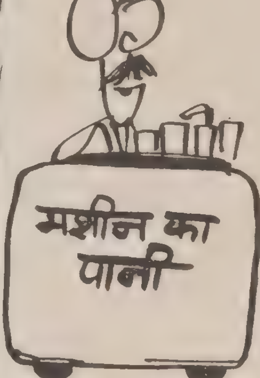




मंत्री को सूरज सेमिनार का पंडाल नजर आता है। (किसी हिल स्टेशन पर आयोजित)।

ठंडा पानी बेचने वालों को

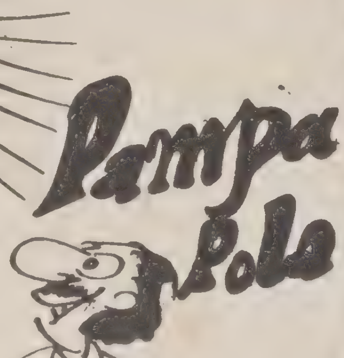




ठंडा पानी बेचने वालों को सूरज दस पैसे का सिक्का नजर आता है। जितने की प्रायः प्यासे पानी पीते हैं।

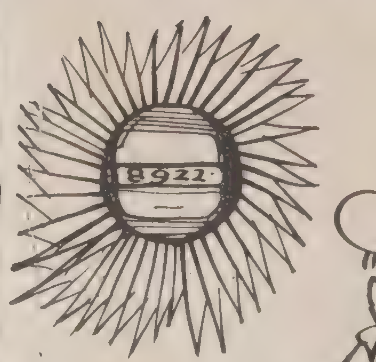
आम शहरी युवा पीढ़ी को

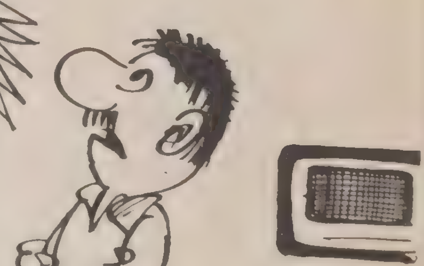




आम शहरी पीढ़ी को सूरज कोल्ड ड्रिंक के बोतल का ढक्कन नजर आता है।

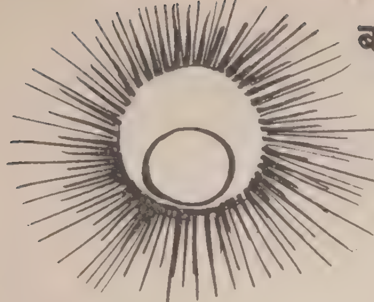
एयर कंडीशनर वालों को

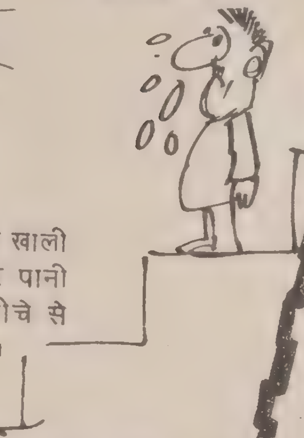




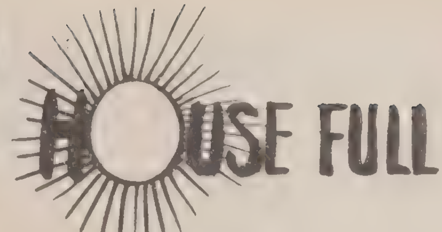
एयर कंडीशनर लगे घर के मालिकों को सूरज तेजी से घूमता बिजली का मीटर नजर आता है।

बरसाती में रहने वालों को

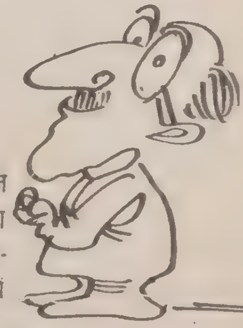




बरसाती में रहने वालों को सूरज खाली बाल्टी नजर आता है। ऊपर पानी चढ़ता नहीं। बाल्टी लेकर नीचे से पानी ले जाना पड़ता है।



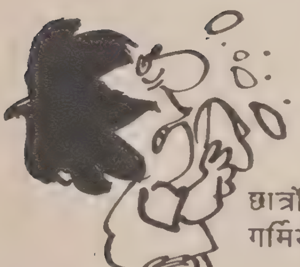
सिनेमा, थियेटर मालिकों को



सिनेमा थियेटर के मालिकों को सूरज हाउसफुल का ओ (o) नजर आता है। गर्मी से बचने के लिए ही अधिकतर लोग गर्मियों में सिनेमा हालों में जाते हैं।

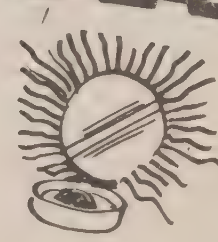
छात्रों को

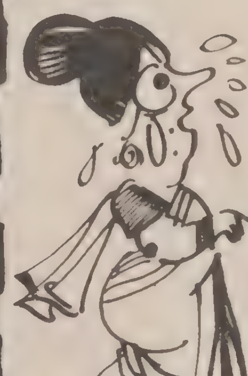




छात्रों को सूरज शून्य नजर आता है। गर्मियों की छुट्टियों से पहले परीक्षायें जो हुई होती हैं।

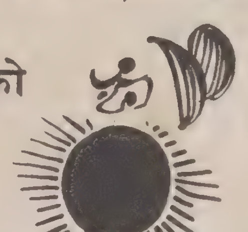
महिलाओं को





महिलाओं को सूरज उनके **मेकअप** का बॉक्स का दर्पण वाला **ढक्कन** नजर आता है। पसीने से रूज पाउडर बहने के कारण बार-बार पाउडर एप्लाई करना पड़ता है।

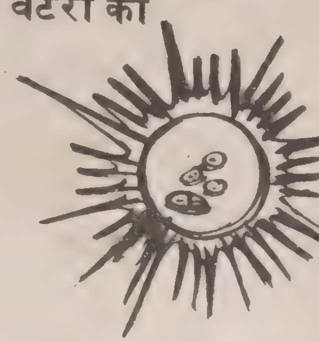
दफ्तर के बाबुओं को

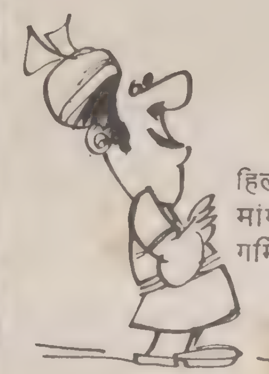




दफ्तर के बाबुओं को सूरज बीवी का लड़ाई के लिए खुला मुँह नजर आता है। एयरकंडीशंड आफिस में बैठे ऊंघते बाबू गर्मियों में देर से घर जाते हैं।

हिल स्टेशन के वेटरों को



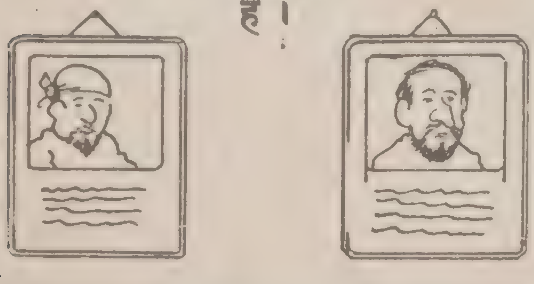


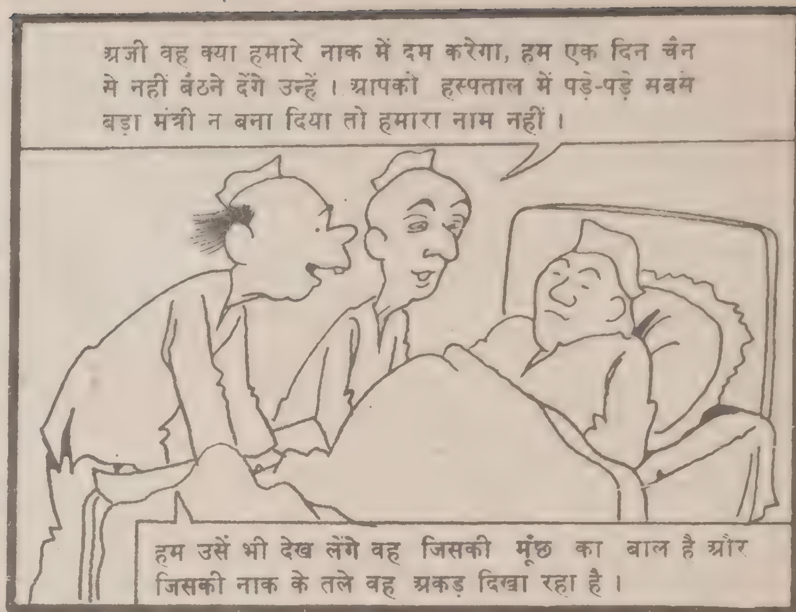
हिल स्टेशन के वेटरों को सूरज टिप मांगने वाली प्लेट नजर आता है। गर्मियों में सैलानियों की टिप ही उनके लिये एकमात्र आकर्षण है।

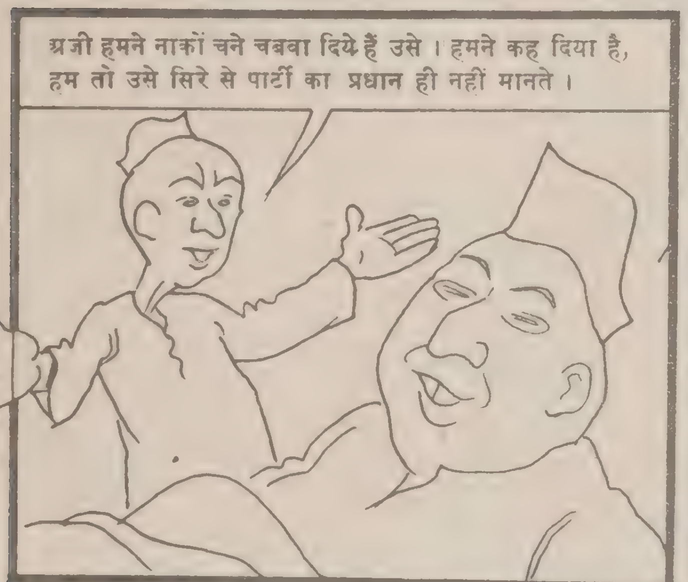
जनता पार्टी के बड़े नेता अपने को देश की नाक समझते थे, आज वे एक दूसरे के लिये खतरनाक हैं ।

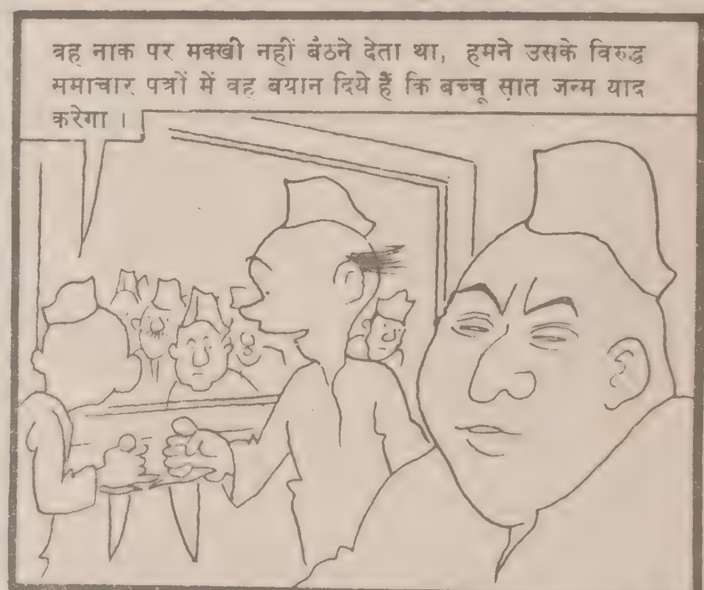
सवाल यह है ?

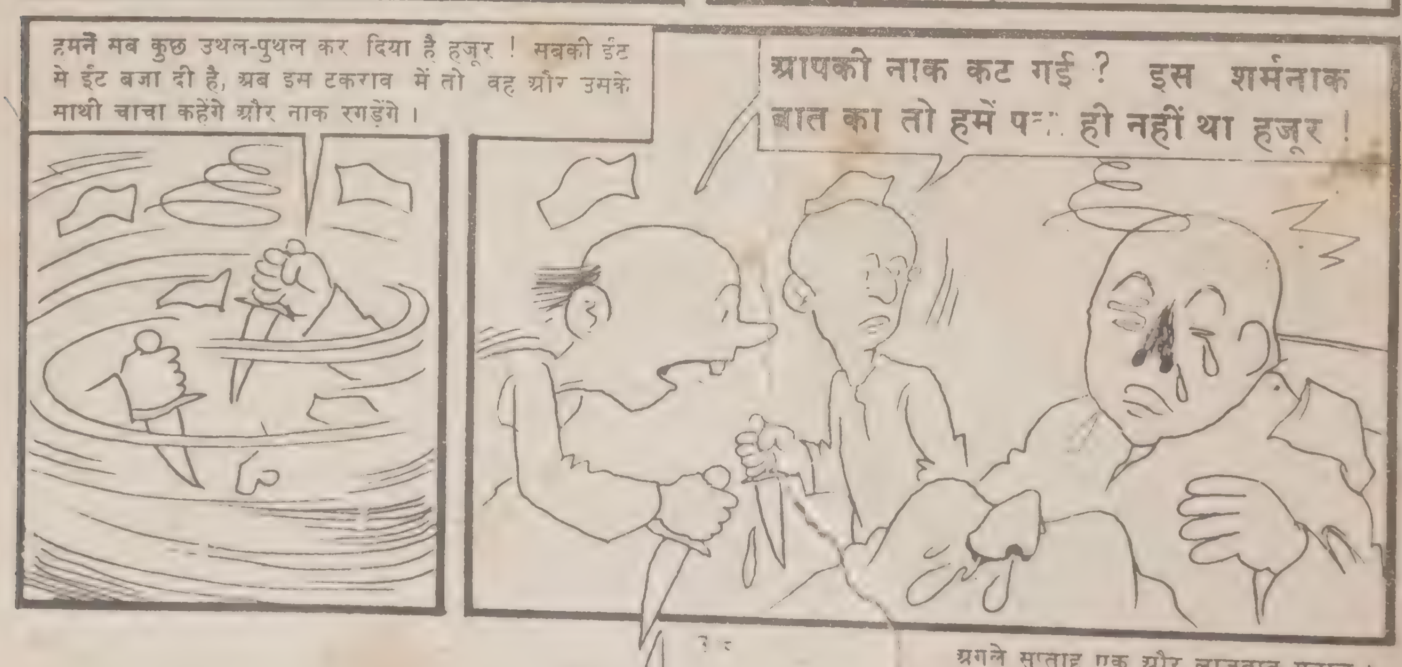
कि वह नाक जो कभी हसरतनाक थी, आज कितनी अफसोसनाक और दर्दनाक है ।











अगले सप्ताह एक और लाजवाब सवाल ।

टूटते जुड़ते फेरे

कु० रचना सैनी

हिन्दू धर्म के अनुसार विवाह एक धार्मिक संस्कार है जिसका उद्देश्य शरीर की शुद्धि करना है। अतः यह एक पवित्र बंधन है।

पूर्व काल से ही शादी की कुछ मान्यताएं और परम्परायें कायम हो गई हैं जिन्हें आज के युग में प्रगतिशील युवक भी तोड़ने से असमर्थ हैं। रमेश भी इसी बंधन के कारण अपने घर वालों से परेशान था। उसके पिता शंकर सिंह पुराने जमींदार थे। अंग्रेजों के भाग जाने के बाद देश में प्रजातंत्री सरकार कायम हुई जिसने सबको कानूनी तौर पर समानता के हक दिये।

पुरानी रईसी की बू शंकर सिंह के रोम-रोम में बसी हुई थी। वह बिगड़े रईस थे। इनके घर में अच्छी खेतीबाड़ी, नकदी, जेवर आदि सब कुछ था, परन्तु जैसे-जैसे उनका बुढ़ापा आता वैसे-वैसे उन्हें पैसे की चिन्ता होती थी। रमेश जो शंकर सिंह का एक मात्र पुत्र था वह अपने पिता की लालची आदत से बहुत ही दुःखी था। शंकर सिंह ने उसे अमेरिका में इन्जीनियरी की उच्च शिक्षा प्राप्त करा दी।

जब रमेश अमेरिका से डिग्री प्राप्त करके वापस आया तो उसे दूर से ही देखकर उसकी मां बल्लियों उछल पड़ी। इतना लंबा-चौड़ा और इतना सजा-धजा, अरे ! इस का तो रंग ही बदल गया। बिल्कुल अमरीकन लगने लगा। रमेश ने टैक्सी से उतरते ही पास आकर अपने मात-पिता के पैर छुए। आते ही उसे अपने देश में एक अच्छी नौकरी मिल गई। दो साल से वह नौकरी कर रहा था और अच्छी तनख्वाह ले रहा था फिर भी अभी, वह कुंवारा था। बहुत अच्छे से अच्छे रिश्ते आए पर शंकर सिंह के लोभ-लालच के कारण रिश्ता तय न हो सका। किसी की लड़की की अशिक्षा और कुरूपता बीच की बाधक बन जाती थी। किसी की लड़की के सर्वगुण सम्पन्न होने पर भी शंकर सिंह की आर्थिक मृगतृष्णा उनको असमंजस में डाल देती थी। एक दिन जब रमेश के दफ्तर की छुट्टी थी उसकी मां ने नाश्ता करते समय प्रातः डाइनिंग टेबिल पर एक फोटोग्राफ लाकर उसके सामने उसकी शादी की राय हेतु रख दिया। रमेश को वह फोटो अत्यधिक पसंद आया। रमेश ने अपनी मां से कहा···मुझे तो पसंद है···पर बाबूजी को



यह रिश्ता मंजूर हो तब ना। हां बाबूजी से कह दीजिए कि यदि उन्होंने लालच में आकर कोई अन्य रिश्ता मंजूर कर लिया तो मैं कभी व्याह नहीं करूंगा।···इस पर उसकी मां बोली—ऐसी बात नहीं कहते बेटा। मैं उन्हें समझाऊंगी और कहूंगी कि एक साहित्यक एवं चित्रकला में एम० ए० पास लड़की का रिश्ता बार बार थोड़े ही मिलता है।

रमेश अपने मित्रों के साथ बाहर चला गया उसकी मां ने शंकर सिंह से उसकी दिल की बात पहुंचा दी। शंकर सिंह ने अपनी पत्नी से आह भरकर कहा—तुम क्या जानो रमेश की मां। हमारे पुराने जमींदारों की समाज में अब भी बड़ी इज्जत है। अगर हमने कम दहेज लेकर लड़के का व्याह किया तो हमारी समाज में नाक कट जाएगी। वैसे महिपाल सिंह जो एक अच्छे खाते-पीते परिवार के व्यक्ति हैं। उन्होंने अपनी लड़की को एक अच्छा चित्रकार और साहित्यकार बना कर एम० ए० तक पढ़ाया है। अतः स्वाभाविक है कि उन्होंने दहेज के लिए भी अच्छी रकम जोड़ रखी होगी। फिर तो हमारे रमेश में किस बात की कमी है। भगवान की कृपा से अच्छा रंग, डील-डौल और काबिल इंजीनियर है। तुम सोचा करती हो कि वर्तमान समय टल जाने से आगे उसके लिए कोई भी रिश्ता न आएगा, सो ऐसी बात नहीं, सैंकड़ों रिश्तों के सन्देश मेरे पास आए दिन आते ही रहते हैं।

···लेकिन रमेश कहता है कि यह लड़की उसकी देखी हुई है। वह उसी से शादी करेगा।···मां ने कहा।

···दिमाग खराब है उसका। उसे जवानी का जोश है। मैं सारी बातें आजकल के लड़कों की जानता हूं···उसके पिता ने गरजते हुए शब्दों में कहा।

मां ने तुरन्त उत्तर दिया···अगर वह अपनी बात पर अड़ गया तो ?'

'यदि तुम मां बेटा की राय एक ही होगी तो मेरी क्या चलेगी ?'

शंकर सिंह ने फैसला दिया। रमेश की पसन्द और किसी दूसरे से ब्याह न करने की धमकी से शंकर सिंह लचक गए और महिपाल सिंह जी की लड़की कु० भावना से रमेश का रिश्ता पक्का हो गया। फलदान

में महिपाल सिंह जी कपड़े, मोटी रकम और ऐशो-आराम आदि का सामान दे गए। जाते-जाते महिपाल सिंह जी ने कहा—अभी कुछ नकदी रकम और रह गई उसे ब्याह में दे दूंगा।

पर लालच बुरी बला है, शंकरसिंह की इच्छा थी कि वह सारी रकम उसी वक्त ऐंठ लेते, पर बेटे के सामने होने के कारण वह अपनी इच्छा जाहिर न कर पाए।

शादी की वह निश्चित तिथि आई और सायं लगभग सात बजे बारात महिपाल सिंह जी के दरवाजे पर पहुंची। वह कंजूसों के मारे बारात में केवल दस ही आदमी ले गए और गाने-बजाने का प्रबन्ध भी नहीं किया। यदि किसी शहरी ने उनसे ऐसी सुनसान बारात आने के बारे में पूछ-ताछ की तो उन्होंने कहा कि—भाई मुझे तो ढम-ढम बाजों-वाजों लौडे-लफाड़ों का शोरगुल बिल्कुल पसंद नहीं।

महिपाल सिंह जी फलदान तो चढ़ा आए थे, पर उसके दूसरे दिन भावना की मां की अचानक तबियत खराब हो गई। वह दिनों-दिन पीली पड़ने लगी। डाक्टर और वैद्य आते और फीस बटोरकर चले जाते पर भावना की मां की तबियत गिरती ही जाती। महिपाल सिंह जी की आर्थिक हालत खर्चे के कारण डावांडोल हो गई थी। मन-ही-मन में सोचते कि शंकर बाबू को पत्र लिखकर ब्याह अगले साल तक रोकने के लिए लिख दें। बीमारी पर इतना पैसा खर्च हो गया कि उनके पास सगाई की बाकी रकम अदा करने के लिए पैसा न रहा। उन्होंने सोचा कि शंकर सिंह बूढ़े और तजुर्बेकार आदमी हैं। मैं यदि अपनी सही वर्तमान परिस्थिति से उन्हें नम्रता, विनम्रता पूर्वक निवेदन करूंगा तो वह वादा किया हुआ पैसा आगे पीछे ले लेंगे।

इन्हीं विषम दुर्भाग्यशील परिस्थितियों में फंस जाने पर वह शंकर बाबू को पत्र न लिख सके, पर बदकिस्मती से पानी की तरह पैसा बहाने के बावजूद भावना की मां शादी से एक हफ्ते पूर्व ही इस दुनिया से चल बसी।

भावना के नेत्रों के आँसू सूख भी न पाए थे कि बारात उसके दरवाजे पर आ पहुंची। वह भगवान को धन्यवाद दे रही थी कि उसके ससुर बैंड बाजा, सज-धज कर बारात दरवाजे पर नहीं लाये। वरना उसका दिल ही फट जाता। रात को जब रमेश और भावना की भाँवरें पड़ीं तो महिपाल सिंह जी ने भाँवरों के बाद बेटी से कहा—

तेरी मां मुझे सात दिन पूर्व छोड़ गई, आज तूने भी मुझे छोड़ दिया।' इस पर बेटी और बाप दोनों के नेत्रों से आँसूओं का झरना बहने लगा। भावना अनेक विचारों में डूबी हुई थी और समझ न पा रही थी कि वह अपने ब्याह की शुभ बेला पर हंसे या रोए। उसकी सहेलियां उसे चारों ओर से घेर कर उसे साँत्वना दे रही थी। पर उसके मन को शाँति नहीं मिल रही थी।

अतः ऐसे गूढ़ विचारों में डूबकर उसने ब्याह की रस्मों में किसी प्रकार की रुचि नहीं दिखाई। विदा का समय आखिर में आ ही गया। बाराती दूल्हे के साथ मण्डप के नीचे बैठ गए। लेन-देन की बाकी अदायगी होना बाकी थी। कन्या पक्ष की ओर से आए मेहमान अपने-अपने तोहफे भेंट कर रहे थे। महिपाल सिंह जी शंकर सिंह को एक दो चीज जो पूर्व वायदानुसार बाकी रह गई थीं चुकता करने में समर्थ न थे, इसलिए वह हाथ जोड़ते हुए···आँखों में आँसू ले घबराये स्वर में नम्र निवेदन करने लगे। लड़की की मां अभी सात दिन पूर्व स्वर्ग लोक को सिधार गई। उसकी बीमारी में मेरी हालत बहुत पस्त हो गई है। वर्तमान समय आर्थिक तौर पर मैं इस हालत में नहीं हूं कि इस समय आपको कुछ और दे सकूं।···

शंकर सिंह का चेहरा मुरझा गया वे बोले 'आपने पहले इसका जिक्र क्यों नहीं किया मैं लड़के की भाँवरें ही नहीं डलवाता।'

'ऐसी बात नहीं।' महिपाल सिंह जी उनकी खिन्नता दूर करते हुए बोले।' आप मेरी परिस्थितियों को समझने की कोशिश कीजिये! आपकी रकम जरूर आप को दी जायेगी। आप इस समय लड़की को विदा करा लीजिए, बाकी धन इकट्ठा होते ही आपकी सेवा में लेकर हाजिर हो जाऊंगा।

उस समय बरातियों के सामने रमेश की हिम्मत नहीं हो रही थी कि अपने लालची पिता को समझाता। वह कह रहे थे—'शादी ब्याह खेल नहीं होता, महिपाल सिंह जी अगर आपके पास में पूरी रकम नहीं थी तो ब्याह का नाम ही न लेते। मैं बिना रकम लिए लड़की को विदा नहीं कराऊंगा। जब आपके पास पैसे हों तब लड़की को हमारे यहाँ छोड़ आना।'

भावना को अपना और पिता का अपमान सहन न हुआ। अभी तक वह दुल्हिन के रूप में अन्दर सिमटी चुपचाप बैठी हुई थी। सहसा बाहर आकर बोली···यदि पैसे के आगे लड़की के गुणों की कोई कीमत नहीं तो मैं आज इस विवाह संबंध को तोड़ती हूं।

बाराती एवं घरवाले सब भावना की इस स्पष्ट बात को सुनकर दंग रह गए। उनकी सहेलियों ने फुस-फुसाकर कहा, भावना, क्या कहती है! चल, भीतर चल।

भावना कहती जा रही थी। जब ये लोग मेरे ही घर मेरी बेइज्जती कर रहे हैं तो ससुराल में मुझे क्या सुखी रखेंगे?'

रमेश को लगा कि वह आई हुई परी भी उसके हाथ से गई। भावना उसके पिता की ओर इशारा कर रही थी आप लोग वापिस चले जाइए। रकम देना तो दूर अब भावना आप जैसे निम्न विचारों के व्यक्तियों के दरवाजे पर पैर भी न रखेगी और यह संबंध तोड़ती हूं। हां यदि इस बारात में अन्य कोई लड़का मुझसे ब्याह करने को तैयार है तो वह सामने आए। मैं उससे ब्याह करूंगी।

भावना के इस फैसले पर सहेलियां चीख उठीं। भावना···

तुरन्त ही भावना से विभोर हो एक नौजवान लड़का मंडप में उठा और संकोच भरी आवाज में बोला, 'मैं हूं, पर आप मेरी अयोग्यता देखते स्वयं तैयार न होंगी।

'आप अपना परिचय दीजिए,' भावना बोली।

मुझे सुरेन्द्र कहते हैं। मैं बी० एस० सी० के पहले साल में पिछले तीन साल से फेल हो रहा हूं, लड़का बोला।

भावना ने रमेश की ओर इशारा करते हुए कहा—मेरे लिए आप इन महाशय से कहीं अधिक योग्य हैं। जिन्होंने समाज से विरोध लेकर मुझे अपनाने का जोखिम उठाया। मैं नौकरी करके आपको पढ़ाऊंगी और बड़ा आदमी बनाऊंगी।

भावना के फैसले का महिपाल सिंह जी विरोध न कर सके। शंकरसिंह को काटो तो खून नहीं। उनके इस अपमान की कोई सीमा न थी। पर उसके पास अब बदले का कोई भी उपाय न था।

सब लोग अचरज से भावना को देख रहे थे। उसके मुख मंडप पर अभूतपूर्व आशा झलक रही थी। ●



...कुमार रंगा, दीपचन्द, ...ोड, पुरानी धर्मशाला ...ने रोहतक,(हरियाणा) ...०१, १५ वर्ष, मित्रता ...बड़ों का आदर करना।



जागीरें सिंह, टी ८२/३, हरलक लाइन, पो० दिलकुशा लखनऊ कैन्ट, २२ वर्ष, शत्रुघ्न सिन्हा की एक्टिंग करना, पिक्चर देखना।



सन्तोष कुमार बारबर, मिमरोह गढ़, जि० चित्तोडगढ़ (राज०) १७ वर्ष, सिनेमा देखना, पत्र व्यवहार करना, दीवाना पढ़ना, फिल्म देखना।



नरेश कुमार आर्य, द्वारा सीताराम आर्य हाइडल कालोनी विक्टोरिया पार्क, मेरठ, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, रेडियो सुनना, फिल्म देखना।



मुजफ्फर हुसैन खां, मु० घेर सलाबत खां, २५ वर्ष, अखबार पढ़ना व बेचना, पत्र-मित्रता करना, बड़ों की सेवा करना, पिक्चर देखना।



सुरेन्द्र सिंह ग्रोवर, म० न० ७, गोपाल पार्क दिल्ली, २२ वर्ष, सबसे प्यार करना, मित्र बनाना, दीवाना पढ़ना, दीवाना बेचना, फिल्में देखना।



विनोद कुमार साहू, भरिया मनबाद (धनबाद) १२ वर्ष, मोटर साइकिल चलाना, डाकुओं से भिड़ना, सी. आई. डी. इन्स्पेक्टर बनना।



...ल मिगलानी, जे-३/ ...राजोरी गार्डन, नई ...७, १८ वर्ष, गिटार ...तैराकी, अच्छी फिल्में ...दीवाना पढ़ना।



राज कुमार, म० नं० ३६८ रामपुरा, दिल्ली-११००३५, १६ वर्ष, आशिकी करना, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना, सैर करना, एक्टिंग करना।



राजीव गोस्वामी, नवनीतलाल, हवेली, एम. जी. रोड, घाटको पार, बम्बई-४०००७७, २२ वर्ष, एक्टिंग करना, स्टोरी लिखना, दीवाना पढ़ना।



रामगोपाल सिंघानियाँ, शनि मन्दिर के पीछे, यवतमाल, २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, कहानी, कविताएं, लेख लिखना, अच्छी शिक्षा प्राप्त करना।



अशोक सहगल, राम निवास, इशान रोड, सिविल लाइन, लुधियाना, १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फरमाइश भेजना, दीवाना पढ़ना।



गुलाम नबी शहरी, मो० साबिर बुद्धाती १४/२, लाहौर पट्टी, इन्दौर-२, २० वर्ष, दीवाना पढ़ना, बकरी पालना, सैर करना, फोटो खींचना।



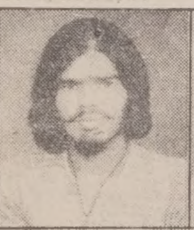
हरमिन्दर सिंह 'समाग' सुपुत्र स० अ.स्मा सिंह 'समाग' द्वारा नथा सिंह, नमकदार मोहल्ला मेहना, भटिंडा, १८ वर्ष, मस्त रहना।



...कुमार 'निर्मल' गिप्सन ...डोई, २१ वर्ष, कहानी ...लिखना, लड़कियों ...करना व पत्र लिखना ...करना।



नरेश चन्द्र बंसल, कक्षा-११ ए, रो० ३० मा० वि०, मु० पो० छानी बड़ी, जिला० श्री गंगा नगर, (राज०) १७ वर्ष, क्रीकेट खेलना।



दयानन्द खन्ना, अमला टोली, बगड़ रोड, रांची, बिहार, १८ वर्ष, फिल्म स्टार बनना, एक्टिंग करना, पत्र-मित्रता करना।



अद्वैत शशिकात रानडे बी- ६७/२ श्रीरंग सोसा० ठाणे ११ वर्ष, किताबें पढ़ना तथा गाना सुनना, एक्टिंग करना, फिल्में देखना।



ओम प्रकाश जादव, ७९३, आजाद मोहल्ला सदर बाजार, लखनऊ कैण्ट, २३ वर्ष, सीरियस दर्द भरे गाने सुनना और सुनाना।



मन्ना ईराकी, स्टेशन रोड, तिनसुकिया, आसाम, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना, बड़ों का आदर करना, सैर करना, पिक्चर देखना।



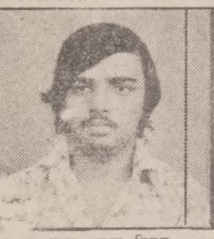
रवि मेनोन, गया काटन मिल्स गया ८२३००१ बिहार, २४ वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना, पत्र मैत्री, फोटो ग्राफी, बड़ों की सेवा करना।



...रोड़ा, ६ फार्न प्लेस, ..., कलकत्ता-१६, १७ ...वाना पढ़ना, पत्र- ...प्यार करना, घोड़े ...कर सैर करना।



महेन्द्र खेतान, ७/८८८ ... टाल, काठमाण्डू, नेपाल, १६ वर्ष, पतंग उड़ाना ... करना, छोटे बच्चों ... करना, सैर करना।



...गुप्ता, द्वारा बिमल ..., ६८ काटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७, १७ वर्ष, फिल्म देखना, पत्र-मित्रता करना, सैर करना।



जय प्रकाश शर्मा, लहान बाजार, जि० सिरहा, नेपाल, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना, पिक्चर देखना।



कमल किशोर सोनी, मोहन नगर, सागर (म. प्र.) १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, डाक टिकट संग्रह करना, छोटी-छोटी बातों में लड़ना।



बजेन्द्र कुमार शुक्ल, ८७ विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पढ़ लिख कर ग्रेजुएट बनना, पत्र-मित्रता करना।



कमल किशोर सिंघल, सी-३/१६१, जनकपुरी, पंखा रोड, नई दिल्ली-११००५८, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फोटो खींचना, फिल्म देखना।



...क. गोड़, १५८/८, ... बिल्डिंग, हा० ई० ..., बम्बई-४०००११ ...ेन फ्रेंडशिप, क्रिकेट ...तरंज खेलना।



सुरेश कुमार गुप्ता, पुल छतू बड़ी बाजार, ८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, बड़ा आदमी बनना, मिनिस्टरों का भाषण सुनना, बड़ों का आदर करना।



राकेश प्रसाद, बिजली कालनी मुजफ्फरपुर-२, १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, चिल्ली से दोस्ती करना, हीरो का बाल काटना, क्रिकेट खेलना।



पदम राम सैनी, मो० न० १६/८६०, उदमीपुरा, झज्जर रोड, रोहतक-१२४००१, १८ वर्ष, दीवाना अंक का प्रत्येक रिकार्ड रखना।



अनुराग गुप्ता, कक्षा १०, छीपा बड़ोद, पूनमचन्द, रमेश चन्द्र छीपा बड़ोद (राज.) १५ वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना, पढ़ना।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________
____
पता ____________________
____
आयु ________ शौक ____________
____

...वाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए, जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

...नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

२६ जून से ५ जुलाई ७८ तक

मेष : यह सप्ताह संघर्षपूर्ण भी है और दिलचस्प भी, चिन्ताएं रहेंगी, सफलता के मार्ग में कुछ बाधाएं पड़ेंगी परन्तु बाद में आप हालात पर नियन्त्रण पा लेंगे और प्रयासों में भी सफलता मिलती रहेगी।

वृष : २६ जून से ३० जून प्रातः तक छोटी बातों में चिन्ता अधिक रहेगी, कुछ काम पूरे होते-होते ही रह जावेंगे या बनकर भी बिगड़ जावेंगे, यात्रा न करें। अन्य दिनों में कारोबार सुधरेगा।

मिथुन : १ जुलाई प्रातः से ३ जुलाई दोपहर तक यात्रा में परेशानी, बड़ों की ओर से चिन्ता, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, व्यय बढ़ेगा। अन्य दिनों में हालात ठीक चलते रहेंगे।

कर्क : सप्ताह दिलचस्प रहेगा परन्तु इन दिनों आपको अपने कामों में सफलता प्राप्त करने के लिए काफी परिश्रम करना होगा, लाभ आशा से कम या कुछ देर से मिलेगा, यात्रा में सुख, आय में वृद्धि होगी।

सिंह : आर्थिक तथा व्यापारिक दृष्टिकोण से सप्ताह लाभप्रद रहेगा, संघर्ष तो काफी करना होगा परन्तु लाभ भी अच्छा होता रहेगा, किसी नजदीकी नातेदार की ओर से परेशानी या झगड़ा काफी रहेगा।

कन्या : २६ जून से १ जुलाई प्रातः तक का समय विशेष अच्छा नहीं, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, आर्थिक संकट पैदा होगा, झगड़े आदि से परेशानी, यात्रा न करें। अन्य दिनों में वातावरण अनुकूल रहेगा।

तुला : १ जुलाई प्रातः से ३ जुलाई दोपहर तक शारीरिक कष्ट काफी रहेगा, कोई नई उलझन पैदा होगी, यात्रा भूल कर भी न करें वरना पछताना पड़ेगा। अन्य दिनों में परिवार से सुख मिलेगा।

वृश्चिक : इस सप्ताह के दौरान आप व्यापार में काफी सुधार महसूस करेंगे, धन का व्यय तो काफी होगा परन्तु बाद में लाभ भी अच्छा होता रहेगा, बिगड़ा काम बन जावेगा, यात्रा लाभप्रद रहेगी।

धनु : सप्ताह दिलचस्प रहेगा, कुछ महत्वपूर्ण काम बनेंगे और लाभ भी अच्छा होता रहेगा, आर्थिक तंगी दूर होती जावेगी, सभा समाज के कामों में दिलचस्पी रहेगी, वातावरण ठीक रहेगा।

मकर : २६ जून से १ जुलाई की प्रातः तक यात्रा छोड़ दें, हानि होगी या चोट भी लग सकती है, काम बन तो जायेंगे परन्तु देरी से, जिससे लाभ में विघ्न पड़ेगा। अन्य दिनों में परिश्रम सफल रहेगा।

कुम्भ : १ जुलाई प्रातः से ३ जुलाई दोपहर तक विरोधी पक्ष से चिन्ता, किसी बनी योजना में रुकावट या हानि होगी, बड़ों की ओर से चिन्ता, यात्रा में कष्ट। अन्य दिनों में भाग्य आपका साथ देगा।

मीन : इन दिनों आपको संघर्ष काफी करना पड़ेगा, परिश्रम करने पर भी सफलता, आशा से कम ही मिलेगी, किसी प्रियजन से सहयोग मिलता रहेगा, यात्रा सफल रहेगी, आय में वृद्धि होगी।

जरीना



जरीना वहाब को फिल्मों में आये पाँच वर्ष पूरे हो चुके हैं। जरीना वहाब ने फिल्म और टी. वी. संस्थान से डिग्री प्राप्त की हुई है। इनका जन्म एक पठान परिवार में राजा मुन्दरी नामक शहर में हुआ।

रूप सौन्दर्य की जो आभा जरीना वहाब पर झलकती है वह बहुत कम नायिकाओं में देखने को मिलती है। जरीना वहाब को सर्वप्रथम देव आनन्द ने 'इश्क इश्क इश्क' में एक छोटा सा रोल दिया। रोल चाहे छोटा हो चाहे बड़ा कलाकार की क्षमता अपने आप बोलती है। वही बात जरीना जी के साथ हुई। 'इश्क इश्क इश्क' में हीरोइन जीनत अमान थीं। लेकिन जरीना अपना विशेष स्थान बना गई और दूसरे निर्माताओं की नजर इस पर पड़ी। शीघ्र ही इन्हें दूसरी फिल्म 'चितचोर' मिल गई। रोल भी छोटा मोटा नहीं था अपितु नायिका का चरित्र था, जो जरीना को निभाना था। पूरी लगन, कुशलता और क्षमता से इन्होंने 'चितचोर' में भूमिका निभाई और इसे कला की उपासना ही कहिये कि इनकी यह फिल्म 'हिट' गई।

इसके बाद इकहरे बदन की सुन्दर सी कन्या, जरीना वहाब की एक के बाद एक फिल्में आने लगीं। फिल्म 'अनोखा' अपने ढंग की अलग फिल्म थी। जिसने भी वह फिल्म देखी जरीना के अभिनय की सराह[ना] की। फिल्म 'मेरे पति की पत्नी' में जरीना ने कमाल ही कर रखा है। बेजो[ड़] अभिनय का प्रदर्शन किया है। हाल ही [में] प्रदर्शित फिल्म 'घरोंदा' के चर्चे बहुत जो[रों] पर हैं। अमोल पालेकर के साथ जरीना वहाब की जोड़ी खूब जमी है। हल्की-फुल[की] मनोरंजक फिल्म 'घरोंदा' में जरीना [ने] अपनी कला को और भी निखारा है।

एक छोटी सी मुलाकात में जरीना [से] हमने पूछा, क्या आप अमोल पालेकर [के] साथ अपनी जोड़ी बनायेंगी, जैसे धर्म-हेमा [ने] बना रखी है।"

"[न]हीं मेरा जोड़ी बनाने का क[भी] वि[चार] नहीं है। जोड़ी तो मैं एक के सा[थ] ही ब[नाऊं]गी, और वह होगा मेरे सपनों [का] राजकुमार यानि मेरा पति। लेकिन अब त[क] वह सपनों वाला राजकुमार साक्षात रूप [में] सामने नहीं आया है। जरीना ने मुस्करा[ते] हुये कहा, "फिल्मी जोड़ियां तो दर्शक बना[ते] हैं दर्शक बिगाड़ते हैं। हम कलाकारों [का] इसमें कम ही हाथ होता है। 'गोपी कृष्ण' [में] सचिन के साथ आ रही हूं। 'अनप[ढ़]' 'आखिरी मुजरा' आदि कई फिल्मों में विभिन्न कलाकारों के साथ आ रही हूं!"

"आपके शौक क्या-क्या हैं ?"

"अपने फैन्ज के पत्रों के जवाब देना [और] दीवाना पत्रिका पढ़ना।" जरीना ने कहा।